



SYLLABUS

Subject - Hindi

Unit	Contents
UNIT - I	भारतीय ज्ञान परम्परा एक परिचय
	भारतीय ज्ञान परम्परा और हिन्दी भाषा
	महर्षि पाणिनी – जीवन और दर्शन
UNIT - II	मैथिलीशरण गुप्त परिचय पाठ: मातृभूमि (कविता)
	सूर्यकांत त्रिपाठी निराला परिचय पाठ भारत वंदना (कविता)
	प्रेमचन्द: परिचय पाठ: शतरज के खिलाड़ी (कहानी)
UNIT - III	वैचारिक भारतीय भाषाओं में राम
	आचार्य रामचन्द्र शुक्ल परिचयपाठ: उत्साह (भावमूलक निबन्ध)
	रामधारी सिंह दिनकर परिचय पाठ: भारत एक है (संस्कृति)
	शरद जोशी परिचय पाठ अफसर (व्यंग्य)
UNIT - IV	शब्द रचना : उपसर्ग एवं प्रत्यय
	शब्द प्रकार : तत्सम, तद्भव, देशज, विदेशी, संकर, नव निर्मित
	पर्यायवाची, विलोमार्थी, अनेक शब्दों के लिए एक शब्द
UNIT - V	संक्षेपण
	बीज शब्द- धर्म, अद्वैत, भाषा, अवधारणा
	हिन्दी के प्रमुख विराम चिन्ह



Unit - 1

Chapter - 1 भारतीय ज्ञान परंपरा

भारतीय ज्ञान परंपरा एक समग्र ज्ञान प्रणाली है जो वेदों, उपनिषदों, पुराणों, शास्त्रों और लोक साहित्य से प्राप्त ज्ञान को समाहित करती है, यह केवल दार्शनिक और आध्यात्मिक विचारों तक सीमित न रहकर, सामाजिक, नैतिक और सांस्कृतिक पहलुओं को भी शामिल करती है। इसका उद्देश्य मानव जीवन के शारीरिक, मानसिक, सामाजिक, और आध्यात्मिक पहलुओं का सर्वांगीण विकास करना है, जिससे व्यक्ति को 'अभ्युदय निःश्रेयस' (लौकिक और आध्यात्मिक उन्नति) प्राप्त हो सके।

भारत की प्राचीन ज्ञान परंपरा में भाषा का अत्यंत महत्वपूर्ण स्थान रहा है। हिंदी भाषा का उद्भव वैदिक संस्कृत की वाचिक परंपरा से जुड़ा है, जहाँ वेदों, उपनिषदों और ब्राह्मण ग्रंथों का मौखिक रूप से संरक्षण हुआ। उस समय ज्ञान को श्रुति परंपरा द्वारा एक पीढ़ी से दूसरी पीढ़ी तक पहुँचाया जाता था। गुरु-शिष्य परंपरा के माध्यम से यह मौखिक ज्ञान आगे बढ़ता रहा और समाज में ज्ञान का प्रसार होता रहा। समय के साथ संस्कृत से सरल भाषाओं की ओर संक्रमण हुआ। प्राकृत, पाली और अर्द्धमागधी भाषाओं ने ज्ञान को जनसाधारण तक पहुँचाने में सहायता की। बौद्ध और जैन धर्मों के प्रचार में इन भाषाओं का विशेष योगदान रहा। इनसे अपभ्रंश भाषाओं का विकास हुआ, जो हिंदी के प्रारंभिक स्वरूप का आधार बनीं। वाचिक परंपरा में इन भाषाओं ने जनता के बीच भक्ति, ज्ञान और दर्शन को सरलता से पहुँचाया।

हिंदी का लिखित विकास 10वीं से 12वीं शताब्दी के अपभ्रंश साहित्य से हुआ। अमीर खुसरो ने हिन्दवी में रचनाएँ कर हिंदी के लिखित रूप को प्रारंभिक पहचान दी। भक्तिकाल (14वीं-17वीं सदी) में तुलसीदास, सूरदास और कबीर ने अवधी, ब्रज और खड़ी बोली में काव्य रचनाएँ कीं, जिससे हिंदी का व्यापक प्रसार हुआ। रीतिकाल में हिंदी साहित्य में शृंगारिकता प्रमुख रही। आधुनिक काल में भारतेन्दु हरिश्चंद्र, महावीर प्रसाद द्विवेदी और प्रेमचंद ने हिंदी को सामाजिक सुधार, यथार्थवाद और राष्ट्रीय चेतना का माध्यम बनाया। स्वतंत्रता संग्राम के दौरान हिंदी ने जनजागरण का कार्य किया। आज हिंदी साहित्य, शिक्षा, विज्ञान, तकनीक और मीडिया की एक सशक्त भाषा है। इस प्रकार हिंदी भाषा भारतीय अस्मिता और ज्ञान परंपरा की अमूल्य धरोहर है।



Chapter -2

भारतीय ज्ञान परंपरा (IKS) वेदों, उपनिषदों, योग और आयुर्वेद से समृद्ध प्राचीन ज्ञान प्रणाली है, जो सामाजिक, दार्शनिक और वैज्ञानिक दृष्टिकोण समाहित करती है। हिंदी भाषा ने इस गहन ज्ञान को सरल बनाकर जन-जन तक पहुँचाया है। भक्तिकालीन साहित्य से लेकर आधुनिक साहित्य तक, हिंदी ने भारतीय संस्कृति, नैतिकता और सांस्कृतिक पहचान को संरक्षित कर पुनर्स्थापित किया है।

भारतीय ज्ञान परंपरा और हिंदी का अंतर्संबंध: ज्ञान का सरलीकरण (लोकभाषा): संस्कृत के जटिल ज्ञान को हिंदी ने 'रामचरितमानस' जैसे महाकाव्यों के माध्यम से आम जनता तक पहुँचाया, जिससे ज्ञान का लोकतंत्रीकरण हुआ।

सांस्कृतिक धरोहर का संरक्षण: कबीर, तुलसी, सूरदास जैसे संतों ने हिंदी के माध्यम से भारतीय दर्शन (अद्वैतवाद, भक्ति) को जीवंत रखा।

अनुवाद और प्रसार: आज हिंदी अनुवाद के माध्यम से प्राचीन भारतीय ग्रंथों को विश्व स्तर पर प्रसारित किया जा रहा है।

राष्ट्र-चेतना: भारतेन्दु हरिश्चंद्र से लेकर मैथिलीशरण गुप्त ('भारत भारती') तक के साहित्यकारों ने हिंदी के माध्यम से राष्ट्र को अपनी गौरवशाली परंपरा की याद दिलाई।

आधुनिक संदर्भ (NEP 2020): राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 में भारतीय ज्ञान परंपरा को शामिल किया गया है, जिसमें हिंदी के माध्यम से प्राचीन आयुर्वेद, योग, विज्ञान और नैतिकता की शिक्षा दी जा रही है।

निष्कर्ष: हिंदी केवल संवाद की भाषा नहीं, बल्कि भारतीय मेधा, दर्शन और परंपरा की संवाहक है, जो प्राचीन ज्ञान को आधुनिक संदर्भों में प्रासंगिक बना रही है।



Chapter – 3

महर्षि पाणिनी का जीवन परिचय

संस्कृत व्याकरण के महान प्रणेता और 'दुनिया के पहले भाषा वैज्ञानिक' माने जाने वाले महर्षि पाणिनी का जीवन परिचय अद्भुत है। उन्होंने अपनी रचना 'अष्टाध्यायी' के माध्यम से संस्कृत भाषा को एक वैज्ञानिक आधार प्रदान किया।

यहाँ उनका संक्षिप्त जीवन परिचय दिया गया है:

1. जन्म और स्थान समय: महर्षि पाणिनी का काल लगभग 500 ईसा पूर्व (5th Century BCE) माना जाता है।

स्थान: उनका जन्म प्राचीन भारत के गांधार महाजनपद के 'शालातुर' नामक ग्राम में हुआ था (जो वर्तमान में पाकिस्तान के लाहौर के पास स्थित है)। इसी कारण उन्हें 'शालातुरीय' भी कहा जाता है।

2. परिवार और शिक्षा माता-पिता: उनके पिता का नाम पणिन था, जिससे उनका नाम 'पाणिनि' पड़ा। उनकी माता का नाम दाक्षी था, इसलिए उन्हें 'दाक्षीपुत्र' भी कहा जाता है।

शिक्षा: माना जाता है कि उन्होंने विश्व प्रसिद्ध तक्षशिला विश्वविद्यालय से शिक्षा प्राप्त की थी।

3. मुख्य रचना: अष्टाध्यायी पाणिनी की ख्याति उनकी महान कृति 'अष्टाध्यायी' के कारण है। यह केवल एक व्याकरण की किताब नहीं, बल्कि भाषा विज्ञान का एक उत्कृष्ट ग्रंथ है।

इसमें कुल 8 अध्याय और लगभग 4,000 सूत्र हैं। इन्होंने अत्यंत संक्षिप्त तरीके से पूरी संस्कृत भाषा को नियमों में बांध दिया। इनके सूत्रों को गणितीय सटीकता के लिए जाना जाता है, जिसे आज के कंप्यूटर प्रोग्रामिंग के तर्क (Logic) से भी जोड़ा जाता है।

4. पौराणिक मान्यता लोकप्रिय मान्यता है कि पाणिनी को व्याकरण का ज्ञान भगवान शिव की कृपा से प्राप्त हुआ था। कहा जाता है कि भगवान शिव के तांडव के समय उनके डमरू से जो 14 ध्वनियाँ निकलीं, उन्हीं को आधार मानकर पाणिनी ने 'माहेश्वर सूत्र' रचे, जो अष्टाध्यायी का आधार है।

5. पाणिनी का योगदान उन्होंने संस्कृत को 'परिष्कृत' (Refined) किया, जिससे वह 'वैदिक संस्कृत' से 'लौकिक संस्कृत' की ओर बढ़ी। उनके नियमों ने संस्कृत को हजारों वर्षों तक अपरिवर्तनीय और शुद्ध बनाए रखा। पाश्चात्य विद्वान भी उन्हें आधुनिक भाषा विज्ञान का जनक मानते हैं।



विशेष तथ्य: पाणिनि की मृत्यु के विषय में कहा जाता है कि उनकी मृत्यु एक व्याघ्र (बाघ) के हाथों हुई थी। संयोगवश, उस दिन त्रयोदशी तिथि थी, इसलिए आज भी कई विद्वान इस तिथि को व्याकरण का अनध्याय (छुट्टी) रखते हैं।

अष्टाध्यायी:- पाणिनि जी मुख्य रूप से अपने अष्टाध्यायी के कार्य से जाने जाते हैं। लोगों का ऐसा मानना है कि इसे समझना बहुत ही कठिन है क्योंकि जिस प्रकार से इसकी रचना की गई है एक साधारण पुरुष इसको ना समझ सकता है ना इसका निर्माण कर सकता है। इसे समझने वाला बहुत बड़ा बुद्धिजीवी होगा, ऐसा उस समय माना जाता था, जिसके कुछ समय बाद ही इसको सरल भाषा में अनुवादित किया गया ताकि सब इसे समझ सके। जब तक अन्य भारतीय विद्वानों द्वारा इसे सरलतम रूप में लिखा गया तब तक यह अन्य देशों तक पहुंच गया था और इसे पढ़कर अधिकतम वैज्ञानिक यह ऐलान कर चुके थे कि इसे समझ पाना वाकई कठिन है और संस्कृत भाषा को ही सभी भाषाओं की माँ माना जाता है। इस ग्रंथ में आठ अध्याय हैं तथा प्रत्येक अध्याय में 4 पद हैं। इस पुस्तक में संस्कृत भाषा से जुड़े महत्वपूर्ण नियमों का उल्लेख किया गया है जो संस्कृत सीखने में सहायक सिद्ध होता हैं।



Unit – 2

Chapter - 1

मैथिलीशरण गुप्त का जीवन परिचय

जीवन परिचय :- राष्ट्रकवि मैथिलीशरण गुप्त का जन्म झांसी जिले के **चिरगांव नामक** स्थान पर **1886 ई.** में हुआ था। इनके पिता जी का नाम सेठ रामचरण गुप्त और माता का नाम काशीबाई था। इनके पिता को हिंदी साहित्य से विशेष प्रेम था, गुप्त जी पर अपने पिता का पूर्ण प्रभाव पड़ा। इनकी प्राथमिक शिक्षा चिरगांव तथा माध्यमिक शिक्षा मैकडोनल हाईस्कूल (झांसी) से हुई। घर पर ही अंग्रेजी, बंगला, संस्कृत एवं हिंदी का अध्ययन करने वाली गुप्त जी की प्रारंभिक रचनाएं कोलकाता से प्रकाशित होने वाले **वैश्योपकारक** नामक पत्र में छपती थीं। आचार्य महावीर प्रसाद द्विवेदी जी के संपर्क में आने पर उनके आदेश, उपदेश एवं स्नेहमय परामर्श से इनके काम में पर्याप्त निखार आया। भारत सरकार ने इन्हें **पद्मभूषण** से सम्मानित किया। **12 दिसंबर 1964** को मां भारती का सच्चा सपूत सदा के लिए पंचतत्व में विलीन हो गया।

साहित्यिक परिचय:- गुप्ता जी ने खड़ी बोली के स्वरूप के निर्धारण एवं विकास में अपना महत्वपूर्ण योगदान दिया। गुप्ता जी की प्रारंभिक रचनाओं में इतिवृत्त कथन की अधिकता है। किंतु बाद की रचनाओं में लाक्षणिक वैचित्र्य एवं सूक्ष्म मनोभावों की मार्मिक अभिव्यक्ति हुई है। गुप्त जी ने अपनी रचनाओं में प्रबंध के अंदर गीतिकाव्य का समावेश कर उन्हें उत्कृष्टता प्रदान की है। गुप्ता जी की चरित्र कल्पना में कहीं भी अलौकिकता के लिए स्थान नहीं है। इनके सारे चरित्र मानव हैं उनमें देव एवं दानव नहीं हैं। इनके राम, कृष्ण, गौतम आदि सभी प्राचीन और चिरकाल से हमारी श्रद्धा प्राप्त किए हुए पात्र हैं। इसलिए वे जीवन पर ना और स्फूर्ति प्रदान करते हैं। साकेत के राम ईश्वर होते हुए भी तुलसी की भांति आराध्य नहीं, हमारे ही बीच के एक व्यक्ति हैं।

कृतियां (रचनाएं):- गुप्तजी ने लगभग 40 मौलिक काव्य ग्रंथों में भारत भारती (1912), रंग में भंग (1909), जयद्रथ वध, पंचवटी, झंकार, साकेत, यशोधरा, द्वापर, जय भारत, विष्णु प्रिया आदि उल्लेखनीय हैं।

भारत भारती में हिंदी भाषियों में जाति और देश के प्रति गर्व और गौरव की भावना जगाई। **रामचरितमानस** के पश्चात हिंदी में राम काव्य का दूसरा प्रसिद्ध उदाहरण **साकेत** है। **यशोधरा** और **साकेत** मैथिलीशरण गुप्त ने दो नारी प्रधान काव्य की रचना की।

भाषा शैली:- हिंदी साहित्य में खड़ी बोली को साहित्यिक रूप देने में गुप्त जी का महत्वपूर्ण योगदान है। गुप्त जी की भाषा में माधुर्य भाव की तीव्रता और प्रयुक्त शब्दों का सुंदर अद्भुत है।



वे गंभीर विषयों को भी सुंदर और सरल शब्दों में प्रस्तुत करने में सिद्धहस्त थे। इनकी भाषा में लोकोक्तियां एवं मुहावरे को के प्रयोग से जीवंतता आ गई है। गुप्तजी मूलतः प्रबन्धकार थे, लेकिन प्रबंध के साथ-साथ मुक्तक, गीति, गीतिनाट्य, नाटक आदि क्षेत्र में भी उन्होंने अनेक सफलताएं की हैं। इनकी रचना **पत्रावली** पत्र शैली में रचित नूतन काव्य शैली का नमूना है। इनकी शैली में गेयता, प्रवाहमयता एवं संगीतत्मकता विद्यमान है।

हिंदी साहित्य में स्थान:- मैथिलीशरण गुप्त जी की राष्ट्रीयता की भावना से ओतप्रोत रचनाओं के कारण हिंदी साहित्य में इनका विशेष स्थान है। हिंदी काम राष्ट्रीय भावों की पुनीत गंगा को बहाने का श्रेय गुप्तजी को ही है। अतः ये सच्चे अर्थों में लोगों में राष्ट्रीय भावनाओं को भरकर उनमें जनजागृति लाने वाले राष्ट्रकवि हैं। इनके काव्य हिंदी साहित्य की अमूल्य निधि है।

राष्ट्रप्रेम गुप्त जी की कविता का प्रमुख स्वर है। भारत भारती में प्राचीन भारतीय संस्कृति का प्रेरणाप्रद चित्रण हुआ है। इस रचना में व्यक्त स्वदेश प्रेम ही इनकी पर्वती रचनाओं में राष्ट्रप्रेम और नवीन राष्ट्रीय भावनाओं में परिणत हो गया। उनकी कविता में आज की समस्याओं और विचारों के स्पष्ट दर्शन होते हैं। गांधीवाद तथा कहीं-कहीं आर्य समाज का प्रभाव भी उन पर पड़ा है। अपने काव्य की कथावस्तु गुप्ता जी ने आज के जीवन से ना लेकर प्राचीन इतिहास अथवा पुराणों से ली है। यह अतीत की गौरव गाथाओं को वर्तमान जीवन के लिए मानवतावादी एवं नैतिक प्रेरणा देने के उद्देश्य से ही अपना आते हैं।

मृत्यु:- मैथिलीशरण गुप्त जी पर गांधी जी का भी गहरा प्रभाव पड़ा था इसलिए उन्होंने राष्ट्रीय आंदोलन में भाग लिया और कारावास की यात्रा भी की थी। यह एक सच्चे राष्ट्र कवि भी थे। इनके काम हिंदी साहित्य की अमूल्य निधि माने जाते हैं। महान ग्रंथ **भारत भारती** में इन्होंने भारतीय लोगों की जाती और देश के प्रति गर्व और गौरव की भावना जताई है। अंतिम काल तक राष्ट्र सेवा में अथवा काव्य साधना में लीन रहने वाले और राष्ट्र के प्रति अपनी रचनाओं को समर्पित करने वाले राष्ट्रकवि मैथिलीशरण गुप्त जी 12 दिसंबर सन 1964 ईस्वी को अपने राष्ट्र को अलविदा कह गए।

मातृभूमि / मैथिलीशरण गुप्त

नीलांबर परिधान हरित तट पर सुन्दर है।
सूर्य-चन्द्र युग मुकुट, मेखला रत्नाकर है॥
नदियाँ प्रेम प्रवाह, फूल तारे मंडन हैं।
बंदीजन खग-वृन्द, शेषफन सिंहासन है॥
करते अभिषेक पयोद हैं, बलिहारी इस वेष की।
हे मातृभूमि! तू सत्य ही, सगुण मूर्ति सर्वेश की॥
जिसके रज में लोट-लोट कर बड़े हुये हैं।



घुटनों के बल सरक-सरक कर खड़े हुये हैं॥
परमहंस सम बाल्यकाल में सब सुख पाये।
जिसके कारण धूल भरे हीरे कहलाये॥
हम खेले-कूदे हर्षयुत, जिसकी प्यारी गोद में।
हे मातृभूमि! तुझको निरख, मग्न क्यों न हों मोद में
पा कर तुझसे सभी सुखों को हमने भोगा।
तेरा प्रत्युपकार कभी क्या हमसे होगा?
तेरी ही यह देह, तुझी से बनी हुई है।
बस तेरे ही सुरस-सार से सनी हुई है॥
फिर अन्त समय तू ही इसे अचल देख अपनायेगी।
हे मातृभूमि! यह अन्त में तुझमें ही मिल जायेगी॥
निर्मल तेरा नीर अमृत के से उत्तम है।
शीतल मंद सुगंध पवन हर लेता श्रम है॥
षट्ऋतुओं का विविध दृश्ययुत अद्भुत क्रम है।
हरियाली का फर्श नहीं मखमल से कम है॥
शुचि-सुधा सींचता रात में, तुझ पर चन्द्रप्रकाश है।
हे मातृभूमि! दिन में तरणि, करता तम का नाश है॥
सुरभित, सुन्दर, सुखद, सुमन तुझ पर खिलते हैं।
भाँति-भाँति के सरस, सुधोपम फल मिलते हैं॥
औषधियाँ हैं प्राप्त एक से एक निराली।
खानें शोभित कहीं धातु वर रत्नों वाली॥
जो आवश्यक होते हमें, मिलते सभी पदार्थ हैं।
हे मातृभूमि! वसुधा, धरा, तेरे नाम यथार्थ हैं॥
क्षमामयी, तू दयामयी है, क्षममयी है।
सुधामयी, वात्सल्यमयी, तू प्रेममयी है॥
विभवशालिनी, विश्वपालिनी, दुःखहर्त्री है।
भय निवारिणी, शान्तिकारिणी, सुखकर्त्री है॥
हे शरणदायिनी देवि, तू करती सब का त्राण है।
हे मातृभूमि! सन्तान हम, तू जननी, तू प्राण है॥
जिस पृथ्वी में मिले हमारे पूर्वज प्यारे।
उससे हे भगवान! कभी हम रहें न न्यारे॥
लोट-लोट कर वहीं हृदय को शान्त करेंगे।
उसमें मिलते समय मृत्यु से नहीं डरेंगे॥
उस मातृभूमि की धूल में, जब पूरे सन जायेंगे।
होकर भव-बन्धन- मुक्त हम, आत्म रूप बन जायेंगे॥



प्रश्न 1. धरती का परिधान क्या है?

उत्तर: नीलांबर।

प्रश्न 2. मातृभूमि का मुकुट क्या है?

उत्तर: सूर्य और चंद्र मातृभूमि के मुकुट है।

प्रश्न 3. मातृभूमि का करधनी क्या है?

उत्तर: मातृभूमि का करधनी समुद्र है।

प्रश्न 4. कौन मातृभूमि के स्तुति गीत गाते हैं?

उत्तर: पक्षियों का समूह।

प्रश्न 5. कवि अपनी मातृभूमि के लिए क्या करना चाहते हैं?

उत्तर: कवि अपनी मातृभूमि के लिए आत्मसमर्पण करना चाहते हैं।

प्रश्न 6. कवि कैसे बड़े हुए हैं?

उत्तर: इस धरती की धूली में लोट-लोट कर बड़े हुए हैं।

प्रश्न 7. कवि पैरों पर खड़ा रहना कैसे सीखा है?

उत्तर: इस धरती में घुटनों के बल पर रेंगकर पैरों पर खड़ा रहना सीखा।

प्रश्न 8. इसके रचनाकर कौन हैं? (आनंद बखशी, कुँवर नारायण, मैथिलीशरण गुप्त, जगदीश गुप्त)

उत्तर: मैथिलीशरण गुप्त

प्रश्न 9. 'रत्नाकर' शब्द का समानार्थी शब्द कोष्ठक से चुनकर लिखें। (नदी, समुद्र, तालाब, नाला)

उत्तर: समुद्र

प्रश्न 10. मातृभूमि के आभूषण क्या-क्या हैं?

उत्तर: नीलांबर, सूर्य-चंद्र युग, रत्नाकर, नदियाँ, फूल तारे, खग – वृंद, शेषफन आदि मातृभूमि के आभूषण हैं।

प्रश्न 11. कवि की राय में भारवासियों की देह किससे बनी हुई है?

उत्तर: मातृभूमि से/ मिट्टी से



प्रश्न 12. तेरा प्रत्युपकार कभी क्या हमसे होगा? ऐसा क्यों कहा गया है?

उत्तर: मातृभूमि माँ के समान है। जिस प्रकार माँ की ममता का प्रत्युपकार कर नहीं सकता है उसी प्रकार मातृभूमि का भी प्रत्युपकार हम नहीं कर सकते। मातृभूमि का स्थान हम मानव से भी श्रेष्ठ है।

प्रश्न 13. मातृभूमि किसकी सगुण मूर्ति है? (ईश्वर की, माता की, गुरु की)

उत्तर: ईश्वर की

प्रश्न 14. मातृभूमि का मुकट क्या है?

उत्तर: सूर्य और चंद्र

प्रश्न 15. कवि मातृभूमि पर बलिहारी होता है। क्यों?

उत्तर: मातृभूमि और प्रकृति में अटूट संबंध है। इसलिए कवि मातृभूमि को ईश्वर की सगुण मूर्ति मानता है और मातृभूमि पर बलिहारी होता है।

प्रश्न 16. 'मातृभूमि' किस युग की कविता है? (द्विवेदी युग, छायावादी युग, प्रगतिवादी युग)

उत्तर: द्विवेदी युग

प्रश्न 17. 'धुलि' का समानार्थी शब्द कवितांश से ढूँढ़ें। (सनी, बनी, मिली)

उत्तर: सनी

प्रश्न 18. 'तेरा प्रत्युपकार कभी क्या हमसे होगा' – कवि ऐसा क्यों कहता है?

उत्तर: हमारा सबकुछ मातृभूमि से मिली है। यह देह, यह जीवन और अंत में हमें स्वीकार करनेवाला भी मातृभूमि है। इसलिए कवि ऐसा कहता है।

प्रश्न 19. कवि एवं काव्यधारा का परिचय देते हुए कवितांश की आस्वादन टिप्पणी लिखें।

उत्तर: प्रस्तुत पंक्तियाँ द्विवेदी युग के प्रसिद्ध कवि श्री मैथिलीशरण गुप्त द्वारा लिखा गया है। देशप्रेम, वीरता, प्रकृति चित्रण आदि इस समय के विशेषताएँ हैं। खड़ी बोली का विकास भी इस काल में हुआ है। साकेत पंचवटी यशोधरा आदि गुप्त जी के प्रसिद्ध रचनायें हैं।



Chapter -2

सूर्यकांत त्रिपाठी 'निराला' का जीवन परिचय

सूर्यकांत त्रिपाठी 'निराला' (1896-1961) हिंदी साहित्य में छायावाद के चार प्रमुख स्तंभों में से एक, विद्रोही और युगप्रवर्तक कवि थे। बंगाल में जन्मे निराला मूलतः उत्तर प्रदेश के उन्नाव निवासी थे। उन्होंने मुक्तछंद की नींव रखी और 'सरोज स्मृति', 'राम की शक्ति पूजा' जैसी कालजयी रचनाएँ दीं। जीवनभर संघर्ष करने वाले निराला को हिंदी का क्रांतिकारी कवि कहा जाता है।

सूर्यकांत त्रिपाठी निराला का जीवन परिचय:

जन्म: 21 फरवरी 1896 (कुछ मतों के अनुसार 1899), महिषादल राज्य (मेदिनीपुर, बंगाल)।

मूल निवास: गढ़ाकोला, जिला-उन्नाव, उत्तर प्रदेश।

बचपन: बचपन का नाम 'सुर्जकुमार' था।

शिक्षा: औपचारिक शिक्षा कक्षा 9 तक, लेकिन स्व-अध्ययन से संस्कृत, बांग्ला और अंग्रेजी का ज्ञान प्राप्त किया।

पारिवारिक जीवन: कम उम्र में पत्नी मनोहरा देवी का निधन। 1918 के स्पैनिश प्लू में परिवार के कई सदस्यों की मृत्यु और बाद में पुत्री सरोज की असामयिक मृत्यु ने उन्हें गहरा दुःख दिया।

व्यक्तित्व: वे एक निर्भीक, मस्तमौला और सिद्धांतवादी व्यक्तित्व के धनी थे, जिन्हें 'महाप्राण' भी कहा जाता है।

निधन: 15 अक्टूबर 1961



renaissance

college of commerce & management

B.Com/BBA/BAJMC - I Year

Subject: Hindi

साहित्यिक योगदान और कृतियाँ:

निराला ने कविता के अलावा उपन्यास, कहानी और निबंध भी लिखे।

प्रमुख काव्य संग्रह: अनामिका (1923), परिमल (1930), गीतिका (1936), तुलसीदास (1939),
कुकुरमुत्ता (1942), नए पत्ते (1946)।

प्रसिद्ध लंबी कविताएँ: 'राम की शक्ति पूजा', 'सरोज स्मृति'।

उपन्यास: अप्सरा, अलका, प्रभावती, निरुपमा।

कहानी संग्रह: लिली, सखी, सुकुल की बीवी।

विशेषताएँ:

निराला छायावाद की सूक्ष्मता से निकलकर प्रगतिवाद और यथार्थवाद की ओर बढ़े। उन्होंने सड़ी-
गली परंपराओं के खिलाफ अपनी रचनाओं में विद्रोह का स्वर मुखर किया। उनके साहित्य में
ओज, पौरुष और विद्रोही चेतना प्रमुख है।

RENY



Chapter - 3

मुंशी प्रेमचंद जी का जीवन परिचय, कार्यक्षेत्र, रचनाएँ तथा भाषा शैली

जन्म 31 जुलाई 1880 को वाराणसी के निकट लमही गाँव में हुआ था। उनकी माता का नाम आनंदी देवी था तथा पिता मुंशी अजायबराय लमही में डाकमुंशी थे। उनकी शिक्षा का आरंभ उर्दू, फारसी से हुआ और जीवन-यापन का अध्यापन से। पढ़ने का शौक उन्हें बचपन से ही था। 13 साल की उम्र में ही उन्होंने तिलिस्मे होशरूबा पढ़ लिया और उन्होंने उर्दू के मशहूर रचनाकार रतननाथ 'शरसार', मिरजा रुसबा और मौलाना शरर के उपन्यासों से परिचय प्राप्त कर लिया। 1898 में मैट्रिक की परीक्षा उत्तीर्ण करने के बाद वे एक स्थानीय विद्यालय में शिक्षक नियुक्त हो गए। नौकरी के साथ ही उन्होंने पढ़ाई जारी रखी।

1910 में उन्होंने अंग्रेजी, दर्शन, फारसी और इतिहास विषय से इंटर पास किया और 1919 में बी०ए० पास करने के बाद शिक्षा विभाग के इंस्पेक्टर पद पर नियुक्त हुए। सात वर्ष की अवस्था में उनकी माता तथा चौदह वर्ष की अवस्था में पिता का देहांत हो जाने के कारण उनका प्रारंभिक जीवन संघर्षमय रहा। उनका पहला विवाह उन दिनों की परंपरा के अनुसार पंद्रह साल की उम्र में हुआ, जो सफल नहीं रहा। वे आर्य समाज से प्रभावित रहे, जो उस समय का बहुत बड़ा धार्मिक और सामाजिक आंदोलन था। उन्होंने विधवा-विवाह का समर्थन किया और 1906 में दूसरा विवाह अपनी प्रगतिशील परंपरा के अनुरूप बाल-विधवा शिवरानी देवी से किया। उनकी तीन संतानें हुई – श्रीपत राय, अमृत राय और कमला देवी श्रीवास्तव। 1910 में उनकी रचना 'सोजे-वतन' (राष्ट्र का विलाप) के लिए हमीरपुर के जिला कलेक्टर ने तलब किया और उन पर जनता को भड़काने का आरोप लगाया। सोजे-वतन की सभी प्रतियाँ जब्त कर नष्ट कर दी गईं। कलेक्टर ने नवाबराय को हिदायत दी कि अब वे कुछ भी नहीं लिखेंगे, यदि लिखा तो जेल भेज दिया जाएगा।



इस समय तक प्रेमचंद, धनपतराय नाम से लिखते थे। सन् 1915 ई० में इन्होंने महावीर प्रसाद द्विवेदी की प्रेरणा पर 'प्रेमचंद' नाम धारण करके, हिंदी-साहित्य जगत में पदार्पण किया। जीवन के अंतिम दिनों में वे गंभीर रूप से बीमार पड़े। अक्टूबर 1936 में उनका निधन हो गया। उनका अंतिम उपन्यास 'मंगलसूत्र' उनके पुत्र अमृत ने पूरा किया।

कार्यक्षेत्र

प्रेमचंद आधुनिक हिंदी कहानी के पितामह माने जाते हैं। वैसे तो उनके साहित्यिक जीवन का आरंभ 1901 से हो चुका था, पर उनकी पहली हिंदी कहानी सरस्वती पत्रिका के दिसंबर अंक में 1915 में, 'सौत' नाम से प्रकाशित हुई और 1936 में अंतिम कहानी 'कफन' नाम से। बीस वर्षों की इस अवधि में उनकी कहानियों के अनेक रंग देखने को मिलते हैं। उनसे पहले हिंदी में काल्पनिक, एय्यारी और पौराणिक धार्मिक रचनाएँ ही की जाती थी। प्रेमचंद ने हिंदी में यथार्थवाद की शुरूआत की। भारतीय साहित्य का बहुत-सा विमर्श जो बाद में प्रमुखता से उभरा, चाहे वह दलित साहित्य हो या नारी साहित्य, उसकी जड़ें कहीं गहरे प्रेमचंद के साहित्य में दिखाई देती हैं। प्रेमचंद नाम से उनकी पहली कहानी 'बड़े घर की बेटी', 'जमाना' पत्रिका के दिसंबर 1910 के अंक में प्रकाशित हुई। मरणोपरान्त उनकी कहानियाँ मानसरोवर नाम से 8 खंडों में प्रकाशित हुईं। कथा सम्राट प्रेमचंद का कहना था कि साहित्यकार देशभक्ति और राजनीति के पीछे चलने वाली सच्चाई नहीं बल्कि उसके आगे मशाल दिखाती हुई चलने वाली सच्चाई है। यह बात उनके साहित्य में उजागर हुई है। 1921 में उन्होंने महात्मा गाँधी के आह्वान पर अपनी नौकरी छोड़ दी। कुछ महीने 'मर्यादा' पत्रिका का संपादन भार सँभाला, छह साल तक 'माधुरी' नामक पत्रिका का संपादन किया, 1930 में बनारस से अपना मासिक पत्र 'हंस' शुरू किया और 1932 के आरंभ में 'जागरण' नामक एक साप्ताहिक पत्र और निकाला। उन्होंने लखनऊ में 1936 में अखिल भारतीय प्रगतिशील लेखक संघ के सम्मेलन की अध्यक्षता की।



रचनाएँ

प्रेमचंद ने कथा-साहित्य के क्षेत्र में युगांतकारी परिवर्तन किए और एक नए कथा-युग का सूत्रपात किया। जनता की बात जनता की भाषा में कहकर तथा अपने कथा-साहित्य के माध्यम से तत्कालीन निम्न एवं मध्यम वर्ग की सच्ची तस्वीर प्रस्तुत करके वे भारतीयों के हृदय में समा गए और भारतीय साहित्य जगत में 'उपन्यास सम्राट' की उपाधि से विभूषित हुए।

प्रेमचंद ने कहानी, नाटक, जीवन-चरित और निबंध के क्षेत्र में भी अपनी प्रतिभा का अभूतपूर्व परिचय दिया।

अ) उपन्यास – कर्मभूमि, कायाकल्प, निर्मला, प्रतिज्ञा, प्रेमाश्रम, वरदान, सेवासदन, रंगभूमि, गबन, गोदान और मंगलसूत्र (अपूर्ण)

(ब) कहानी संग्रह – नवनिधि, ग्राम्य जीवन की कहानियाँ, प्रेरणा, कफन, कुत्ते की कहानी, प्रेम-प्रसून, प्रेम-पचीसी, प्रेम-चतुर्थी, मनमोदक, मानसरोवर (दस भाग), समर-यात्रा, सप्त-सरोज, अग्नि-समाधि, प्रेम-गंगा और सप्त-सुमन

(स) नाटक – कर्बला, प्रेम की वेदी, संग्राम और रूठी रानी

(द) जीवन-चरित – कलम, तलवार और त्याग, दुर्गादास, महात्मा शेखसादी और राम-चर्चा

(य) निबंध-संग्रह – कुछ विचार

(र) संपादित – गल्प-रत्न और गल्प-समुच्चय

(ल) अनूदित – अहंकार, सुखदास, आजाद-कथा, चाँदी की डिबिया, टॉलस्टाय की कहानियाँ और सृष्टि का आरंभ

भाषा शैली

प्रेमचंद जी की भाषा के दो रूप हैं- एक रूप तो जिसमें संस्कृत के तत्सम शब्दों की प्रधानता है और दूसरा रूप जिसमें उर्दू, संस्कृत और हिंदी के व्यावहारिक शब्दों का प्रयोग किया गया है। इसी भाषा का प्रयोग इन्होंने अपनी श्रेष्ठ कृतियों में किया है। यह भाषा अधिक सजीव, व्यावहारिक और प्रवाहमयी है। यही भाषा प्रेमचंद जी की प्रतिनिधि भाषा है। प्रेमचंद जी ने अपने साहित्य की रचना



जनसाधारण के लिए की। इसी कारण उन्होंने सरल, सजीव एवं सरस शैली में ही अपनी रचनाओं का सृजन किया। वे विषय एवं भावों के अनुरूप शैली को परिवर्तित करने में दक्ष थे। प्रेमचंद जी ने अपने साहित्य में निम्नलिखित शैलियों का प्रयोग किया है-

(अ) वर्णनात्मक शैली – किसी पात्र, वस्तु, घटना आदि का वर्णन करते समय इस शैली का प्रयोग किया गया है। नाटकीय सजीवता इनके द्वारा प्रयुक्त इस शैली की प्रमुख विशेषता है।

(ब) विवेचनात्मक शैली – प्रेमचंद जी ने अपने गंभीर विचारों को व्यक्त करने के लिए विवेचनात्मक शैली को अपनाया है। इस शैली में संस्कृतनिष्ठ भाषा का प्रयोग अधिक किया गया है।

(स) मनोवैज्ञानिक शैली – प्रेमचंद जी ने मन के भावों तथा पात्रों के मन में उत्पन्न अंतर्द्वंद्वों को चित्रित करने के लिए इस शैली का प्रयोग किया है।

(द) हास्य-व्यंग्यात्मक शैली – सामाजिक विषमताओं का चित्रण करते समय इस शैली का प्रभावपूर्ण प्रयोग किया गया है।

(य) भावनात्मक शैली – काव्यात्मक एवं आलंकारिकता पर आधारित इनकी इस शैली के अंतर्गत मानव जीवन से संबंधित विभिन्न भावनाओं की सशक्त अभिव्यक्ति हुई है।

साहित्यिक योगदान

कथा साहित्य के क्षेत्र में प्रेमचंद युगांतकारी परिवर्तन करने वाले कथाकार तथा भारतीय समाज के सजग प्रहरी व एक सच्चे प्रतिनिधि-साहित्यकार थे। डा० द्वारिका प्रसाद सक्सेना ने लिखा है- “हिंदी साहित्य के क्षेत्र में प्रेमचंद का आगमन एक ऐतिहासिक घटना थी। उनकी कहानियों में ऐसी घोर यंत्रणा, दुःखद गरीबी, असप्त दुःख, महान स्वार्थ और मिथ्या आडंबर आदि से तड़पते हुए व्यक्तियों की अकुलाहट मिलती है, जो हमारे मन को कचोट जाती है और हमारे हृदय में टीस पैदा कर देती है।” तैंतीस वर्षों के रचनात्मक जीवन में वे साहित्य की ऐसी विरासत सौंप गए, जो गुणों की दृष्टि से अमूल्य है और आकार की दृष्टि से असीमित। एक श्रेष्ठ कथाकार और उपन्यास सम्राट के रूप में हिंदी-साहित्याकाश में उदित इस ‘चंद्र’ को सदैव नमन किया जाता रहेगा।



शतरंज के खिलाड़ी

1) इस कहानी का मुख्य पात्र कौन है ?

इस कहानी का मुख्य पात्र मीर और मिरजा है।

2) इस कहानी में कहानीकार पराधीन भारत का कौनसा और क्या चर्चा करते है ?

इस कहानी में कहानीकार पराधीन भारत का एक प्रमुख सत्ता - केंद्र लखनऊ के सामाजिक - राजनितिक वातावरण का चर्चा करते है। जिसमे शासक - वर्ग से लेकर आम जनता का अय्याशी में डूबे रहने के बारे में बताते है। छोटे - बड़े , सभी नाच - गाने , पहनने - ओढ़ने , मनोरंजन - नशे में मस्त है। शासक वर्ग से शुरू हुआ यह अय्याशी जीवन आम जनता को भी लुबा चूका है और अकर्मण्य बना चूका है।

3) उनका तर्क क्या होता था ?

उनका तर्क होता था की शतरंज , ताश , गंजीफा खेलने से बुद्धि तीव्र होती है, विचार शक्ति का विकास होता है और पेचीदा मसलो का सुलझाने की आदत पड़ती है।

4) शतरंज का खेल खेलने का लाभ मीर मीरजा क्या बताते हैं ?

मीर मिरजा का मानना था कि शतरंज का खेल से बुद्धि तीव्र (तेज) होती है।

5) शतरंज के खिलाड़ी के माध्यम से प्रेमचंद क्या संदेश देना चाहते हैं ?

जितना मीर और मिरजा अपना दिमाग शतरंज खेलने में लगाते हैं उतना अगर देश के बचाव में लगाते तो यह गुलाम कभी नहीं होता।

6) कोई योगी भी समाधि में इतना एकाग्र न होगा - का आशय समझाइए



इस वाक्य में मीर और मिर्जा की शतरंज के प्रति दीवानगी बताई है खेलने में इतनी एक आग्रह जितना कि कोई समाधि में योगी न हो।

7) शतरंज, गंजीफा, ताश आदि खेलने के प्रति लोगों की क्या धारणा थी ?

शतरंज, गंजीफा, ताश खेलने के प्रति यह धारणा थी कि इनके खेलने से बुद्धि तेज होती है। मिर्जा सज्जाद अली और मीर रौशन अली को धन अर्जित करने की क्यों चिंता नहीं थी? मिर्जा सज्जाद अली और मीर रौशन अली को धन अर्जित करने की चिंता इसलिए नहीं थी क्योंकि दोनों के पास मौरूसी जागिरदारी थी।

8) मोहल्ले के नौकर चाकर शतरंज के खेल के बारे में क्या कहते थे ?

मोहल्ले के नौकर चाकर इस खेल को मनहूस खेल बताया करते थे। कहते थे कि यह घर को तबाह कर देता है और इनकी यह आदत किसी और को न लगे।

9) मिर्जा की बेगम कि इस खेल के बारे में क्या धारणा थी ?

मिर्जा की बेगम को इस खेल से बहुत द्वेष (गुस्सा) था। इसी कारण वह अक्सर खोज खोज कर अपने पति को डांटा करती थी।

10) बेगम के सिर दर्द होने पर मिर्जा क्यों नहीं घर के भीतर आए ?

मिर्जा उस समय मीर साहब के साथ शतरंज खेलने में रमे हुए थे इसलिए उन्होंने बुलवाए पर कोई ध्यान नहीं दिया।

11) मीर के घर कौन और क्यों उन्हें पूछता हुआ आ पहुंचा ?

मिर्जा के घर बैठकर जब शतरंज खेल रहे थे। तभी 1 दिन वहां बादशाही फौज अवसर उन्हें मीर को पूछा हुआ आ पहुंचा। मीर साहब के तो होश उड़ गए। घर के दरवाजे से नौकर से कहलवा



दिया की वह घर पर नहीं है। पर वह कल फिर आने की बात कहकर चले गए। पूछने पर पता चला कि उन्हें सेना में भर्ती करना है।

12) **अमीर और मिरजा गोमती के किनारे शतरंज** खेलने का निर्णय क्यों लिया ?

1 दिन मीर साहब के घर एक बादशाही फौज का अफसर उन्हें अपने साथ ले जाने आया इससे डरकर दोनों दोस्तों ने गोमती के किनारे शतरंज खेलने का निर्णय लिया।

13) कहानी में **प्रजा और राजा की स्थिति** कैसी है ?

कहानी में प्रजा और राजा की दुख भरा है। प्रजा विशेष रूप से गाँव में रहने वाले किसानों से कर (पैसे) के रूप में वसूला जाता था और धन लखनऊ के नवाबों और दरबारियों की झूठी शान और शौकत और उनकी मजे में खर्च कर दिए जाते थे और उन्हें गरीब जनता की फिक्र नहीं थी।

14) **मिरजा के चरित्र** का विशेषता बताइए

मिरजा के पास जागीरदारी थी। धन की कोई कमी नहीं थी। मिरजा साहब को न अपने परिवार की चिंता थी और न लखनऊ की जनता की। उन्हें अपने बादशाह के बंदी बन जाने की चिंता भी नहीं थी। वह अपने शतरंज के साथ आराम और सुविधा के साथ रहना चाहते थे। मिरजा का जो व्यक्तित्व सामने आता है वह उनके कायर, संवेदनाहीन, देश के प्रति उपेक्षा, स्वार्थी और झूठी शान पर जीने वाला दिखते हैं।

15) **मीर के चरित्र** की विशेषता बताइए

मीर साहब शतरंज खेलने के शौकीन थे। परिवार, समाज, देश उनके लिए कोई मायने का नहीं था। वे पूरे रूप से विलासी थे शतरंज की लत के कारण उनका स्वाभिमान नष्ट हो चुका था। मिरजा की पत्नी मीर को पसंद नहीं करती थी किंतु फिर भी वह मिरजा के घर जाना नहीं छोड़ते थे।



मिरजा को उसकी पत्नी को दबाकर रखने की सलाह देते थे। मीर साहब डरपोक और कायर थे। मीर का व्यक्तित्व एक बेईमान, कायर, विलासी, झूठे शान में रहने वाले और स्वार्थी व्यक्ति का है।

16) मीर के घर कौन और क्यों उन्हें पूछता हुआ पहुंचा?

मिरजा के घर बैठकर जब शतरंज खेल रहे थे तभी एक दिन वहां बादशाही फौज अवसर उन्हें मीर को पूछता हुआ आ पहुंचा। मीर साहब के तो होश उड़ गए घर के दरवाजे से नौकर से कहलवा दिया कि घर पर नहीं है। पर वह कल फिर आने की बात कहकर चला गया। पूछने पर पता चला कि उन्हें सेना में भर्ती करना है।

17) मीर और मिरजा ने गोमती के किनारे शतरंज खेलने का निर्णय क्यों लिया?

एक दिन मीर साहब के घर एक बार शाही फौज का अवसर उन्हें अपने साथ ले जाने के लिए आया। इससे डरकर दोनों दोस्तों ने गोमती के किनारे शतरंज खेलने का निर्णय लिया।

18) 'शतरंज के खिलाड़ी' कहानी के शीर्षक की सार्थकता(महत्त्व) पर विचार कीजिए।

शतरंज के खिलाड़ी' शीर्षक पढ़ते ही हमारे दिमाग में शतरंज खेलते लोगों की तस्वीर उभर जाती है। शतरंज एक दिमागी खेल है जिससे मोहरों(ठप्पा) की मदद से राजनीतिक चाले चलकर खिलाड़ी एक दूसरे को हराने का प्रयास करते हैं। राजनीति में भी इसी प्रकार चाले चलकर सत्ता हथियाने(हड़पना) का प्रयास किया जाता है। 'शतरंज के खिलाड़ी' कहानी में मीर और मिरजा अपने समाज और देश के हालातों से कटकर शतरंज खेलने में मगन रहते हैं और इस प्रकार खेलते हैं मानो वे दोनों राजा हो एक दूसरे का राज्य हड़पना चाहते हैं। अंत में वे खेलते खेलते जगड पढ़ते हैं और एक दूसरे की हत्या कर देते हैं।

यह कहानी बताती है कि मीर और मिरजा दोनों बुद्धिमान तथा बहादुर थे, किंतु फिर भी वे देश के हालातों में, देश की स्वाधीनता में साथ ना दे कर अपनी विलासिता में डूबे रहते हैं। जिस प्रकार



शतरंज के मोहरे बेजान राजा और राज्य को दर्शाते हैं, इसी प्रकार मीर और मिरजा अकर्मण्य बने रहते हैं।

19) मिर और मिरजा की मित्रता के सकारात्मक और नकारात्मक पक्षों का उल्लेख कीजिए।
मिर और मिरजा दोनों अच्छे मित्र थे। वह जागीरो के शासक थे तथा बुद्धिमान और बहादुर भी। उनकी मित्रता के सकारात्मक पक्ष से यह हो सकते हैं कि वे दोनों मिलकर यदि अपनी प्रजा की भलाई करते और बुद्धिमानी और बहादुरी को अपने शासक शाह के साथ जोड़ दे तो निश्चित ही वाजिदअली शाह गिरफ्तार नहीं होते और लखनऊ पर अंग्रेजों का शासन नहीं हो पाता। इन दिनों मित्रता से दोनों की शक्ति एक और एक ग्यारह बनकर समाज को मजबूत करती है। इनकी मित्रता के नकारात्मक पहलू यह है कि दोनों विलासी होने तथा शतरंज में मोहर रखने के कारण आलसी हो गए। उन्हें देश और समाज से कोई लेना देना नहीं था। वह कर्तव्य विमुख(बदगुमान) होकर केवल अपने सुख को देखते रहे जिसका परिणाम वाजिद अली शाह की गिरफ्तारी तथा लखनऊ की बर्बादी निकला।

20) जिसे आजीविका के लिए संघर्ष नहीं करना पड़ता उसके जीवन में कुछ विकृतियां(बिगाड़) आ जाती है" - कहानी के आधार पर इस कथन पर विचार कीजिए।

व्यक्ति को जीवन जीने के लिए काम करना पड़ता है तथा मेहनत और संघर्ष करना पड़ता है। लेकिन जो व्यक्ति सफल और संपन्न हो जाते हैं, उन्हें संघर्ष नहीं करना पड़ता। इसलिए उनके पास समय और साधन दोनों होने के कारण उनका समय नहीं गुजरता और वह अलग-अलग शौक पाल लेते हैं। जो जीवन को गलत रास्ते में ले जाता है। मीर और मिरजा दोनों के पास जागीर थी। इसी कारण में विलासी हो गए और उन्होंने अपने कर्तव्य को अनदेखा कर दिया और शतरंज खेलने लगे और वह आलसी हो गए। वे विवेकहीन (अनुचित) और कायर होकर अपने ही देश का विनाश देखते रहे।



21) 'शतरंज के खिलाड़ी' कहानी के उद्देश्य पर विचार प्रस्तुत कीजिए।

'शतरंज के खिलाड़ी' कहानी स्वाधीनता आंदोलन के समय की है। यह वह समय था जब देश को बहादुरों कि नहीं बुद्धिमान लोगों की जरूरत थी। लेकिन देश में अनेक नवाब, छोटे राजा विलासिता में डूबे हुए थे या आपसी झगड़ों में लगे थे जिसके आधार पर यह कहानी लिखी गई है। शतरंज एक ऐसा खेल है जिसमें बुद्धिमान खिलाड़ी ही जीत सकता है।

मीर और मिरजा बुद्धिमान है परंतु विलासिता में डूबे हैं। यदि वे अपनी बुद्धिमानी का प्रयोग देश के लिए करते तो हमारा देश पराधीन(निर्भर) नहीं होता। प्रेमचंद यही कहना चाहते हैं कि हमें देश हित के लिए अपना आराम और विलास को छोड़ देना चाहिए और अपने कर्तव्य को निभाना चाहिए। लेकिन अमीर और मिर्जा देश और समाज को भूल कर अपनी जिम्मेदारियों से मुंह मोड़ कर अपने मनोरंजन में लगे रहते हैं। उनकी बुद्धि का समाज को कोई हित या उपयोग नहीं होता। प्रेमचंद बताना चाहते हैं कि हमारा देश गुलाम क्यों हुआ? किन स्थितियों ने अंग्रेजों को बढ़ावा दिया? एक वर्ग की दुष्ट प्रवृत्ति(झुकाव) और गलत मानसिकता न केवल दूसरे वर्ग को प्रभावित करती है लेकिन देश के लिए भी घातक हो सकता है इसका परिणाम आने वाले अनेक पिंडियों को भुगतना पड़ सकता है। मिर और मिरजा जैसे लोग आपस में लड़कर अपनी बहादुरी दिखाते हैं लेकिन देश के लिए अपने कर्तव्य से मुंह मोड़ कर बैठ जाते हैं।

22) भारत में स्वाधीनता आंदोलन के संदर्भ में 'शतरंज के खिलाड़ी' कहानी के महत्व पर विचार कीजिए।

'शतरंज के खिलाड़ी' कहानी जिस युग के संदर्भ में रची गई है। उस समय भारत अंग्रेजों का गुलाम था तथा स्वाधीनता आंदोलन जोरों पर था। ऐसे समय में देश को साहसी और बुद्धिमान लोगों की जरूरत थी। शतरंज बुद्धिमान का खेल है, वे राजनीति अच्छे से समझ सकते हैं तथा देश की स्वतंत्रता में योगदान दे सकते हैं। इस समय भारत के शासन में नवाबों और छोटे राज्यों की भागीदारी थी, लेकिन वे लोग अपने भोग विलास में उलझे हुए थे। मिरजा और मिर जैसे लोग



बुद्धिमान थे। यदि वे अपने दिमाग को देश को बचाने के लिए लगाते तो देश को गुलाम होने से बचाया जा सकता था। प्रेमचंद ने इस कहानी द्वारा स्वाधीनता आंदोलन से जुड़े नेता और जनता को यह सीख दी है कि देश और स्वतंत्रता वह जन कल्याण के लिए हमें अपने सुख चैन और विलासिता को दूर रख कर देश के प्रति अपनी जिम्मेदारी को समझना होगा। अमीर और मिर्जा अपने दायित्व और समाज के विलासिता का प्रतीक है। पर बुद्धि मानते लेकिन समाज और राष्ट्र के लिए उनकी बुद्धि का कोई उपयोग नहीं था। व्यक्ति का कोई भी शक्ति, कोई भी कार्य तब तक सकारात्मक नहीं कहा जा सकता जब तक वह समाज के लिए उपयोग में ना आए। प्रेमचंद ने इस कहानी द्वारा जनता को चेतावनी दी है कि किन परिस्थितियों के कारण हम गुलाम है और यदि हमें विदेशी शासन से मुक्त होना है तो अपने निजी स्वार्थों से ऊपर उठना होगा और संघर्ष करना होगा। वे कहते हैं कि हमें संकल्प करना होगा कि पहले देश का हित होगा बाकी सब बाद में तभी हमें स्वतंत्रता मिलेगी।

23) 'शतरंज के खिलाड़ी' कहानी में व्यक्त वातावरण की तुलना आज के वातावरण से करते हुए एक टिप्पणी लिखिए।

'शतरंज के खिलाड़ी' का वातावरण उस समय का है, जब देश अंग्रेजों का गुलाम था। वे जनता और शास्त्र (शिक्षा देना) को सभी पर अत्याचार करते थे। नवाब और राजा और जनता सभी विलासिता में डूबे हुए थे। किसी को भी देश की चिंता नहीं थी। कोई नाच गाने में डूबा था तो कोई नशे में डूबा था। शासन, साहित्य, सामाजिक स्थिति, उद्योग, व्यवहार सभी में विलासिता में डूबे थे। विदेशी शासकों के कारण देश की जनता को किसी प्रकार की आजादी नहीं थी। सभी को उनका हुकुम मानना पड़ता था। आज का वातावरण उस समय से अलग है, आज हम स्वतंत्र हैं, अपने तरीके से जीवन जी सकते हैं। सुख सुविधा मौजूद है। किसी प्रकार का अत्याचार होने पर हम कानून का मदद ले सकते हैं। लोकतंत्र में खराब शासक को हटाने का अधिकार जनता रखती है। परंतु यह सब होते हुए भी भ्रष्टाचार है। शासक, नेता, सरकारी अधिकारी और जनता देश हित को छोड़कर अपनी निजी स्वार्थ में लगे हुए हैं। जिसका नतीजा है गरीबी, कुशासन, आतंकवाद,



बेरोजगारी, महंगाई। यह सच है कि आज हम विदेशी शासन के गुलाम नहीं है, लेकिन नेताओं के स्वार्थ के कारण विदेशी निवेश धीरे-धीरे अपना पाव जमाते जा रहे हैं जो देश की स्वतंत्रता के लिए खतरा बन सकता है।

24) मिरजा और मीर के चरित्र की विशेषताओं का विश्लेषण कीजिए।

मिरजा सज्जाद अली और मीर रौशन अली 'शतरंज के खिलाड़ी' कहानी के मुख्य पात्र हैं। दोनों के पास जागीरदारी थी। वे दोनों मित्र थे। पिता की संपत्ति के कारण उनके पास धन की कमी नहीं थी। इसी कारण दोनों काम छोड़ विलासी और कायर हो गए। मिरजा साहब को ना अपने परिवार की चिंता थी ना लखनऊ की जनता कि। उन्हें अपने बादशाह के बंदी(कैदी) बन जाने का भी चिंता नहीं था। वह अपनी शतरंज के साथ अपने आराम में लगे थे। वह अपनी सुविधा और सुख नहीं छोड़ना चाहते थे। लखनऊ की बिगड़ती हालत का उन पर कोई असर नहीं था। मीर साहब को भी मिरजा की तरह शतरंज खेलने और पान हुक्के से प्यार था। परिवार, समाज, देश उनके लिए कोई मायने नहीं रखते थे। वह पूरे विलासी थे। शतरंज की लत के कारण उनका स्वाभिमान नष्ट हो चुका था। मिरजा की पत्नी मीर को पसंद नहीं करती लेकिन फिर भी वह मिरजा के घर जाना नहीं छोड़ते। वह मिरजा को उनकी पत्नी को दबाकर रखने की सलाह देते थे। मीर साहब डरपोक और कायर थे।

RENAISSANCE



Unit – 3

आचार्य रामचंद्र शुक्ल का जन्म

शुक्लजी बीसवीं शताब्दी के सबसे प्रसिद्ध साहित्यकार, निबंधकार, इतिहासकार, कवि, आलोचक आदि थे. हिंदी साहित्य का इतिहास जैसे रचना कर के वह भारतीय हिंदी साहित्य में सबसे प्रसिद्ध लेखक बन गए अचार्यजी बस्ती जिला के अगोना गांव के रहने वाले थे उनका जन्म 4 अक्टूबर 1884 को हुआ था.

हिंदी साहित्य के महान साहित्यकार आचार्य रामचंद्र शुक्ल के पिता का नाम चंद्रबली शुक्ल था और उनकी माता का नाम निवासी देवी था उनके पिता मिर्जापुर में कानूनगो के पद पर नौकरी करते थे रामचंद्र शुक्ल जी के पिताजी का ख्वाहिश था

उनका सपना था कि उनका बेटा भी उन्हीं के तरह उसी विभाग में कानूनगो के पद पर नौकरी करे. रामचंद्र शुक्ल की माता भी एक विदुषी और धार्मिक स्त्री थी पूजा पाठ धार्मिक कार्यों में हमेशा लगी रहती थी.

नाम	आचार्य रामचंद्र शुक्ल
उपनाम	सरदार और लौह पुरूष
जन्म	4 अक्टूबर 1884
जन्म स्थान	बस्ती जिला के अगोना गांव
पिता का नाम	चंद्रबली शुक्ल
माता का नाम	निवासी देवी



रचनाएं	निबंधकार, अनुवादक, संपादक और आलोचक
निबंध	चिंतामणि, विचार विधि
अनुवाद	मेगास्थनीज का भारतवर्षीय विवरण, आदर्श जीवन, कल्याण का आनंद, विश्व प्रपंच, बुद्धचरित इत्यादि
संपादन	तुलसी ग्रंथावली, जायसी ग्रंथावली, हिंदी शब्द सागर, नागरी प्रचारिणी पत्रिका, भ्रमरगीत सार, आनंद कादंबिनी
आलोचना	रस मीमांसा, त्रिवेणी
मृत्यु	1941
सम्मान	
मृत्यु	15 दिसंबर 1950

अचार्य रामचंद्र शुक्ल की शिक्षा

रामचंद्र शुक्ल जब 4 साल के थे तभी अपने पिता के साथ हमीरपुर चले गए थे और उनकी शुरुआती पढ़ाई वहीं पर हुई थी उसके बाद कुछ दिनों के बाद उनके पिता की नौकरी मिर्जापुर सदर में कानूनगो के पद पर हो गई इस वजह से उनका पूरा परिवार मिर्जापुर आकर रहने लगा रामचंद्र शुक्ल जब 9 साल के थे



तभी उनके माता का मृत्यु हो गया इस वजह से उनका जीवन बड़ा दुखमय में हो गया था लेकिन उन्होंने मिशन स्कूल से मैट्रिक की पढ़ाई पूरी की उसके बाद इंटर की पढ़ाई के लिए वह इलाहाबाद चले गए .

इलाहाबाद से उन्होंने इंटर की पढ़ाई पूरी की इसके बाद उनके पिताजी उन्हें वकालत पढ़ने के लिए इलाहाबाद भेज दिया लेकिन रामचंद्र शुक्ला जी को वकालत की पढ़ाई में रुचि नहीं थी इस वजह से वह उत्तरीण नहीं हो सके फिर शुक्लजी मिर्जापुर के ही मिशन स्कूल में अध्यापक के पद पर पढ़ाने लगे

आचार्य रामचंद्र शुक्ल को कई भाषाओं का ज्ञान था हिंदी संस्कृत अंग्रेजी उर्दू बंगला आदि. शुक्ला जी ने इंटर की पढ़ाई भी पूरी नहीं की बीच में ही किसी कारणवश उनकी पढ़ाई छूट गई.

जिसके बाद वह सरकारी नौकरी करने लगे लेकिन उसमें भी किसी तरह की परेशानी होने की वजह से आत्म स्वाभिमान की वजह से उन्होंने नौकरी छोड़ कर मिशन स्कूल में चित्रकला के अध्यापक के रूप में कार्य करने लगे और इसके साथ ही उन्होंने लेखन कार्य भी शुरू कर दिया जिसमें निबंध कहानी कविता नाटक आदि का रचना करने लगे.

उनके लिखे हुए रचनाएं पत्र-पत्रिकाओं में भी छपने लगे और नागरी प्रचारिणी सभा से जुड़कर शब्द सागर के सहायक संपादक के पद पर कार्य करने लगे थे कुछ दिनों बाद आचार्य रामचंद्र शुक्ला बनारस के काशी हिंदू विश्वविद्यालय हिंदी के अध्यापक नियुक्त किए गए.इसके बाद ही उनके साहित्यिक जीवन का शुरुआत हु

आचार्य रामचंद्र शुक्ल का साहित्यिक जीवन

शुक्ला जी ने पढ़ाई पूरी होने के बाद मिर्जापुर में मिशन स्कूल में अध्यापक के पद पर कार्य करने लगे इसके बाद उन्होंने लेख लिखना शुरू किया और उनका लेख पत्र-पत्रिकाओं में भी छपने लगा.

उनकी योग्यता देखकर उससे प्रभावित होकर काशी नागरी प्रचारिणी सभा ने इन्हें शब्द सागर के संपादक का कार्य संभालने को कहा. उसके बाद उन्होंने नागरी प्रचारिणी पत्रिका के संपादन करना शुरू किया. वह एक ऐसे लेखक थे जिनके रचनाओं के बारे में भारतीय हिंदी साहित्य में आज भी चर्चाएं होती हैं.

हिंदी साहित्य का इतिहास लिख कर उन्होंने इतिहास रच दिया रामचंद्र शुक्ल जी के पिता चाहते थे की वो तहसील के दफ्तर में बैठकर काम करें लेकिन आचार्य जी को इस नौकरी में एकदम रुचि नहीं थी



रामचंद्र शुक्ल जी का लेख जो पत्रिकाओं में छपने लगा तो वह पूरे साहित्य जगत में मशहूर होते गए उसके बाद वो काशी के हिंदू विश्वविद्यालय में हिंदी के अध्यापक के पद पर भी काम किया .

रामचंद्र शुक्ल का व्यक्तित्व

अचार रामचंद्र शुक्ल हिंदी साहित्य जगत में कई अमूल्य कृतियों की रचना की उनका पूरा जीवन साहित्य की सेवा में ही बीत गया भारतीय हिंदी साहित्य जगत में उनकी पहचान एक अलग बन गई वह एक निबंधकार, संपादक, समालोचक, लेखक कवि आदि के रूप में प्रसिद्ध हो गए थे अपनी रचनाओं में अचार्य रामचंद्र शुक्ला कई भाषाओं का प्रयोग करते थे

जैसे कि शुद्ध साहित्यिक भाषा, व्यवहारिक भाषा, सरल भाषा, अरबी, फारसी, उर्दू आदि भी शब्द उनके रचनाओं में रहता था सबसे ज्यादा उनकी रचनाओं में संस्कृत के तत्सम शब्द का प्रयोग ज्यादा रहता था

ग्रामीण समाज में जिस तरह का बोलचाल भाषा बात करने का तरीका होता है छोटी-छोटी ग्रामीण भाषा होती है वह उनकी रचनाओं में ज्यादा होते थे उनकी रामचंद्र शुक्ल कि सबसे ज्यादा ख्याति उनकी प्रसिद्धि हिंदी साहित्य का इतिहास लिख करके मिली थी इस रचना के लिए उन्हें हिंदुस्तान अकादमी से 500 का पारितोषिक सम्मान भी प्राप्त हुआ था

स्कूल में अध्यापक का कार्य करते हुए भी उन्होंने अपनी रचनाएं की थी वह एक प्रसिद्ध निष्पक्ष आलोचक थे एक प्रसिद्ध निबंधकार थे एक सफल और प्रसिद्ध संपादक थे साथ ही एक बहुत ही प्रसिद्ध इतिहासकार भी थे.

आचार्य रामचंद्र शुक्ल की रचनाएं

आचार्य रामचंद्र शुक्ल की रचनाएं उच्च कोटि की होती थी शुक्ला जी निबंधकार तथा कवि के रूप में ज्यादा जाने जाते हैं इनकी सबसे प्रिय जो थी वह आलोचना थी इसी आलोचना के चलते इन्होंने अपना स्थान विशेष बना लिया है

शुक्लजी का गद्य के क्षेत्र में विशेष स्थान है उन्होंने निबंध अनुवाद आलोचक आदि की रचनाएं की हैं . उन्हें हिंदी के युग प्रवर्तक के रूप में भी जाना जाता है हिंदी साहित्य का इतिहास जिससे इतिहास में इनका लेखन बहुत सर्वश्रेष्ठ हो गया

उनकी कृतियां ऐतिहासिक सांस्कृतिक धार्मिक दार्शनिक एवं साहित्यिक विषय पर होती हैं. वह कई भाषाओं के ज्ञाता थे जैसे कि हिंदी, उर्दू, बांग्ला, संस्कृत, अंग्रेजी आदि. इन्होंने 19 साल तक



नागरी प्रचारिणी सभा में हिंदी शब्द सागर के सहायक संपादक के पद पर रहे. इनकी प्रमुख रचनाएं कुछ इस तरह है.

1. निबंध

- चिंतामणि
- विचार विधि

2. आलोचना

- रस मीमांसा
- त्रिवेणी

3. आचार्य रामचंद्र शुक्ल जी का इतिहास

हिंदी साहित्य का इतिहास

4. अनुवाद

- मेगास्थनीज का भारतवर्षीय विवरण
- आदर्श जीवन
- कल्याण का आनंद
- विश्व प्रपंच
- बुद्धचरित इत्यादि

5. संपादन

- तुलसी ग्रंथावली
- जायसी ग्रंथावली
- हिंदी शब्द सागर
- नागरी प्रचारिणी पत्रिका
- भ्रमरगीत सार
- आनंद कादंबिनी

6. काव्य रचना

- अभिमन्यु वध
- 11 वर्ष का समय



रामचंद्र शुक्ल का मृत्यु

अचार्य रामचंद्र शुक्ला बहुत ही सक्षम कवि निबंधकार आलोचक आदि थे उनकी सबसे बड़ी विशेषता यह थी कि कम से कम शब्दों में बहुत बड़ी से बड़ी बात अपनी रचनाओं में बता देते थे.

आचार्य रामचंद्र शुक्ल की रचनाओं में व्यवहारिक भाषा का भी प्रयोग किया गया है इसके अलावा उनकी रचनाओं में उर्दू फारसी और अंग्रेजी शब्द का भी प्रयोग मिलता है. इस आलोचना के सम्राट हिंदी के युग प्रवर्तक कहे जाने वाले रामचंद्र शुक्ल का मृत्यु सन 1941 में हुआ था .

आचार्य रामचंद्र शुक्ल जी अपने अंतिम दिनों तक लेखन क्षेत्र में ही बने रहे थे उन्होंने अंतिम दिनों में भी अपने लेखनी नहीं छोड़ी थी भारतीय हिंदी साहित्य में अचार्य रामचंद्र शुक्ल का एक विशेष स्थान है और हमेशा रहेगा .

रामचंद्र शुक्ल की रचनाओं में कई तरह की शैली होती है जैसे कि वर्णनात्मक शैली, विवेकआत्मक शैली, व्याख्यात्मक शैली, आलोचनात्मक शैली, भावनात्मक शैली तथा हादसे व्यंगात्मक शैली . उन्होंने अपनी रचनाओं में यह सारी शैलियों का प्रयोग किया था.

उन्होंने अपनी रचनाओं में संस्कृत के तत्सम भाषा का प्रयोग किया है उन्होंने अपनी रचनाओं में सरल भाषा का प्रयोग किया है और शुद्ध भाषा का भी प्रयोग किया

उत्साह

1. 'उत्साह' किस प्रकार का निबंध है?

उत्तर: उत्साह 'चिंतामणि' से लिया गया एक मनोविकारात्मक निबंध है।

2. 'उत्साह' किसे कहते हैं?

उत्तर: साहसपूर्ण आनंद की उमंग को उत्साह कहते हैं। अर्थात कष्ट या हानि सहने की दृढ़ता के साथ-साथ कर्म में प्रवृत्ति होने पर जो आनंद का योग होता है वही उत्साह कहलाता है।

3. साहसपूर्ण आनंद की उमंग का नाम क्या है?

उत्तर: साहसपूर्ण आनंद की उमंग का नाम 'उत्साह' है।



4. 'युद्ध-वीर' और 'दान-वीर' से आप क्या समझते हैं?

उत्तर: युद्धवीर और दानवीर दोनों में उत्साह पाई जाती है। पर दोनों का स्वरूप अलग-अलग है। जिस उत्साह में आनंदपूर्ण तत्परता के साथ लोग कष्ट-पीड़ा या मृत्यु तक की परवाह न करते हुए पूरी वीरता और पराक्रम के साथ कर्म करते हैं तो वह युद्धवीर कहलाएगा। दूसरी ओर जिस उत्साह में अर्थ-त्याग का साहस अर्थात् उसके कारण होने वाले कष्ट या कठिनाता को सहने की क्षमता अंतर्निहित रहती हो वह दानवीर कहलाएगा।

5. क्या उत्साह की गिनती अच्छे गुणों या बुरे गुणों में होती है?

उत्तर: हाँ : उत्साह की गिनती अच्छे और बुरे दोनों गुणों में होती है।

6. श्रीकृष्ण का कर्म-मार्ग कैसा था?

उत्तर: श्रीकृष्णा का कर्म-मार्ग फलाफल पर केंद्रित न होकर कर्मों को आनंदपूर्वक तरीके से करते जाना था। अर्थात् वे फल या परिणाम की चाह नहीं रखते थे।

7. सच्चे उत्साही बनने के लिए किन-किन गुणों की आवश्यकता है?

उत्तर: सच्चे उत्साही बनने के लिए कर्म के प्रति लगाव, फल प्राप्ति से दूर, दान-वीर, बुद्धि-वीर, कष्ट एवं हानि को आनंद के साथ स्वीकारना आदि गुणों की आवश्यकता है।

RENA



Chapter -3

रामधारी सिंह दिनकर का जीवन परिचय

दिनकर जी का जन्म सन् 1908 में बिहार के बेगूसराय जिले के सिमरिया घाट नामक ग्राम में एक साधारण किसान परिवार में हुआ था। इनकी प्रारम्भिक शिक्षा घर पर ही हुई। कविता लिखने का शौक इन्हें विद्यार्थी जीवन से ही था। हाईस्कूल पास करने के बाद ही इन्होंने 'प्राण भंग' नामक काव्य पुस्तक लिखी जो सन् 1929 में प्रकाशित हुई। सन् 1932 में बी. ए. परीक्षा उत्तीर्ण करके इन्होंने एक उच्च माध्यमिक विद्यालय में प्रधान अध्यापक के पद पर कार्य किया।

इसके बाद अवर निबन्धक के पद पर सरकारी नौकरी में चले गये। बाद में प्रचार विभाग के निदेशक के पद पर स्वतन्त्रता प्राप्ति के बाद तक कार्य करते रहे। इसके बाद इन्होंने बिहार विश्वविद्यालय में हिन्दी विभाग के अध्यक्ष पद पर कुछ समय तक कार्य किया। तत्पश्चात् भागलपुर विश्वविद्यालय के उपकुलपति भी रहे। अन्त में भारत सरकार के गृह विभाग में हिन्दी सलाहकार के रूप में एक लम्बे अरसे तक हिन्दी के प्रचार-प्रसार के लिए कार्यरत रहे।

इनको ज्ञानपीठ और साहित्य अकादमी के पुरस्कारों से सम्मानित किया गया। सन् 1959 में भारत सरकार ने इन्हें 'पद्म भूषण' की उपाधि से अलंकृत किया और सन् 1962 में भागलपुर विश्वविद्यालय ने आपको डी. लिट् की मानद उपाधि से सम्मानित किया। इस प्रकार हिन्दी की अनवरत सेवा करते हुए सन् 1974 में हिन्दी साहित्याकाश का यह 'दिनकर' सदा-सदा के लिए अस्त हो गया।

रामधारी सिंह दिनकर जी का परिवार

पिता का नाम	बाबू रवि सिंह
माता का नाम	मनरूप देवी
भाई के नाम	केदारनाथ सिंह, रामसेवक सिंह
पत्नी का नाम	श्यामावती देवी
संतान	एक पुत्र (नाम ज्ञात नहीं)



रामधारी सिंह दिनकर का साहित्यिक परिचय

दिनकर जी आधुनिक युग के एक ऐसे उदीयमान साहित्यकार हैं जिन्होंने बाल्यावस्था से लेकर वृद्धावस्था तक हिन्दी-साहित्य की अनवरत सेवा की है। यह कवि और कुशल गद्यकार के रूप में साहित्य जगत में जाने जाते हैं। इन्होंने गद्य के माध्यम से भारतीय संस्कृति, दर्शन और कला का गम्भीर विवेचन प्रस्तुत किया है। साथ ही हिन्दी के प्रचार के लिए स्तुत्य कार्य किया है। इस प्रकार 'दिनकर' जी ने हिन्दी की महान् सेवा की है। अतः आधुनिक हिन्दी साहित्य के प्रणेताओं में 'दिनकर' जी का स्थान दिनकर के सट्टश सर्वोच्च है।

रामधारी सिंह दिनकर की कृतियाँ

दिनकर जी बहुमुखी प्रतिभा के कलाकार थे। आपकी प्रसिद्धि का मूल आधार कविता है। लेकिन गद्य लेखन में भी आप पीछे नहीं रहे और अनेक अनमोल गद्य ग्रन्थ लिखकर हिन्दी साहित्य की अभिवृद्धि की है आपकी रचनाएँ निम्नलिखित हैं

गद्य ग्रन्थ --- अर्द्धनारीश्वर, मिट्टी की ओर, रेती के फूल बट पीपल, उजली आग, भारतीय संस्कृति के चार अध्याय, हमारी सांस्कृतिक एकता।

काव्य ग्रन्थ --- प्रण भंग, रेणुका, रसवन्ती, सामधेनी, बापू, हुँकार, रश्मिरथी, परशुराम की प्रतिज्ञा, आदी।

महाकाव्य --- कुरुक्षेत्र, उर्वशी।

बाल निबन्ध-मिर्च का मजा, सूरज का ब्याह, चित्तौड़ का सांका।

रामधारी सिंह दिनकर की भाषा

दिनकर जी की भाषा शुद्ध और परिमार्जित खड़ी बोली है। इसमें उर्दू, अंग्रेजी तथा देशज शब्दों का उन्मुक्त प्रयोग मिलता है। इनकी भाषा में संस्कृत के तत्सम शब्दों का भी बाहुल्य है। इनकी भाषा सहज प्रवाहमयी है, इसमें कृत्रिमता नाम मात्र को नहीं है। मुहावरों और कहावतों के प्रयोग से भाषा सजीव और ओजमयी हो गयी है। विषय के अनुरूप इनकी भाषा सर्वत्र परिवर्तित होती रहती है।

रामधारी सिंह दिनकर की शैली

दिनकर की शैली को तीन रूपों में विभाजित किया जा सकता है — विवेचनात्मक शैली, उद्धरण शैली और सूक्ति शैली। उनकी गद्य की प्रमुख शैली विवेचनात्मक ही है। यह शैली प्रभावोत्पादक तथा सारयुक्त है। उद्धरण शैली में लेखक अपनी बात की पुष्टि के लिए अन्य विद्वानों के कथनों को उद्धृत



करता चलता है सूक्ति शैली में इस प्रकार के उदाहरण दिये जाते हैं जिसका सार्वजनिक महत्त्व होता है। दिनकर जी की शैली में इस प्रकार के उद्धरण और सूक्ति वचनों की भरमार है। ईर्ष्या तून गई मेरे मन से पाठ उनकी इस शैली का एक ज्वलन्त उदाहरण है। इस प्रकार दिनकर जी एक चतुर भाषा-शिल्पी और कुशल शैलीकार हैं।

शरद जोशी का जीवन परिचय

शरद जोशी ने सामाजिक परिवर्तनों, राजनीतिक और सांस्कृतिक उथल-पुथल को बड़ी बारीकी से समझा और देखा था। शरद जोशी के व्यक्तित्व और कृतित्व पर गहरा असर पड़ा। शरद जोशी वर्तमान व्यवस्था से बहुत क्षुब्ध थे। वे स्वयं कदम-कदम पर दिखने वाले व्यवस्था के खोखलेपन को एक पल भी सहने के लिए तैयार नहीं होते थे। वे हमेशा व्यवस्था को बदलने की भावना एवं विचारों से उद्वेलित रहते थे। उनके विचारों में गहरा सच्चा और खरा अनुभव झलकता था। गहरे चिंतन मनन और परीक्षण के बाद उन्होंने अपनी आस्थाओं की बुनियाद डाली थी। विपरीत परिस्थितियों से संघर्ष करते हुए उन्होंने साहित्य और पत्रकारिता की सेवा की।

परिवार क्रम उज्जैन नगरी मालवा की संस्कार धानी है। यह महाकालेश्वर की पवित्र भूमि है यह भूमि साहित्य के लिए उर्वरा रही है। साहित्य के कई अनमोल रत्नों को इस भूमि ने जना और तराशा है। व्यंग्य कार और हिन्दी व्यंग्य के षिकार पुरुष व्यंग्यार्थि शरद जोशी का जन्म मध्य प्रदेश के उज्जैन शहर में 21 मई 1931 को हुआ था।

शरद जोशी के पिता श्री निवास जोशी मध्य प्रदेश रोडवेज में डिपों मैनेजर के पद पर कार्यरत थे। शरद जोशी की माता-का नाम शांति था। उनके परिवार में शरद जोशी को मिलकर कुल 6 भाई-बहन थे। शरद जोशी की मृत्यु 5 सितम्बर 1991 मुंबई में हुई।

अपने परिवार के बारे में जानकारी देते हुए स्वयं शरद जोशी ने लिखा है- “हम कुल छः भाई-बहन हैं। सब एक-दूसरे से प्रकृति में अलग हैं। छोटे थे तो मारपीट करते थे। अब एक-दूसरे को बेवकूफ समझते हैं। सबका अपना व्यक्तित्व है, अपनी भाषा और अपना कार्यक्षेत्र। मेरी बड़ी बहन पार्थिव पूजे बिना खाना नहीं खाती और मेरे सामने कोई ईश्वर का नाम ले लें, तो मूड ऑफ हो जाता है।”



शरद जोशी के पिता सरकारी नौकरी में थे। वे जब तक शहर में अपने पाँव जमाते थे तब तक किसी दूसरे शहर में उनका तबादला हो जाता था।

शरद जोशी का परिवार मूलतः गुजराती परिवार है। इनका परिवार चार पीढ़ियों पहले गुजरात से मालवा आया था और इस परिवार में मालवी संस्कृति को अपने भीतर आत्मसात कर लिया था शरद जोशी के दादा, परदादा, उज्जैन में ही रहे।

‘शरद जोशी’ के बचपन का नाम ‘बच्चू’ था। उनके पिता श्री निवास जोशी उस समय रोडवेज में डिपो मैनेजर के पद पर कार्यरत थे। विभागीय कर्मचारियों का एक बहुत बड़ा हिस्सा उनकी देख-रेख में था कर्मचारी उन्हें बच्चू को छोटे मैनेजर साहब कहते थे। उनके दादा परदादा यहीं के बाशिंदे थे। शरद जोशी के पिता स्वयं सरकारी नौकरी में थे इसीलिए उनकी इच्छा थी कि घर का बड़ा बेटा यानी शरद जोशी भी सरकारी नौकरी करें।

शरद जोशी का जन्म एक ऐसे ब्राह्मण परिवार में हुआ था जहां जात-पात और कर्मकाण्ड को बहुत ज्यादा महत्त्व दिया जाता था। उनके घर का माहौल काफी अनुशासित था। कर्मकाण्डों ब्राह्मण परिवार में छुटपन में घर पर उनको कठोर नियंत्रण में रखा जा रहा था। शरद जोशी से यह अपेक्षा की जा रही थी कि वह दिन रात-खूब पढ़ाई करके क्लास में अब्बल आए। उन्हें कोर्स के अतिरिक्त पुस्तकें पढ़ने की घर में इजाजत नहीं थी।

उन्होंने बचपन में प्रेमचन्द, शरदचन्द्र व देवकी नन्दन खत्री की पुस्तकों को अपने घरवालों से छुपाकर पढ़ा था। घर के बंदिशों वाले माहौल में वे एक प्रकार की घुटन महसूस किया करते थे। उन्हें अपने घर का माहौल किसी जेलखाने से कम नहीं लगता था। तब किसी ने कल्पना भी नहीं की होगी कि जिस बच्चू को बचपन में कठोर अनुशासन और बंदिशों के बीच रखा गया है वह बड़ा होकर शरद जोशी के रूप में हिन्दी व्यंग्य साहित्य का महान लेखक साबित होगा।



शरद जोशी स्वभाव से हंसमुख, दृढ़-निष्चयी तथा स्वाभिमानी थे। पढ़ाई के सिलसिले में वे कभी उज्जैन, कभी नीमच कभी देवास, कभी महू तो कभी इंदौर भटकते रहे। शरद जोशी के शौक और व्यसन करीब-करीब एक जैसे थे। उन्हें किताबें पढ़ना-घूमना, बातचीत करना, पैसे खर्च करना, लिखना और खूब लिखते रहने का शौक था। शरद जोशी बचपन से लिखते रहे थे। जोशी के परिवार में पाठ्य पुस्तकों के अलावा कुछ भी पढ़ने या लिखने की इजाजत नहीं थी शरद जोशी इस मामले में विद्रोही प्रकृति के साबित हुए।

उन्होंने बचपन से ही जमकर लिखना शुरू कर दिया। लिखने के शौक को घरवालों से छुपकर पूरा किया। बचपन में ही उनके लेख अखबारों और पत्रिकाओं में छपने लगे। कुछ समय “छदम्” नाम से भी लिखा। दोस्तों के साथ मिलकर हस्तलिखित पत्रिकाएँ निकाली शरद जोशी ने अपनी पहली कमाई लेखन से ही की थी। उन्होंने एक अखबार में लेख लिखा था, और उन्हें मेहनताना मिला था। 1953 में शरद जोशी ने इंदौर के दैनिक अखबार ‘नई दुनिया’ में एक स्तंभ लिखना शुरू किया।

शरद जोशी कहते हैं- “जब मैं नई दुनिया इंदौर में सप्ताह में तीन की गति से कॉलम लिखता था मुझे तीस रूपए प्रतिमाह मिलते थे अर्थात् माह में बारह कॉलम के प्रति कॉलम ढाई रूपए। कहानी लिखने पर बारह रूपए से बीस रूपया तक प्राप्त होते थे।” 1953 में उन्होंने नई दुनिया इंदौर में “परिक्रमा” नामक स्तंभ लिखना शुरू कर दिया और एक युवा व्यंग्यकार के रूप में उभरे। 1957 में इन्हीं लेखों का संग्रह परिक्रमा के नाम से ही प्रकाशित हुआ। शुरूआती दौर में उन्होंने कहानियां भी लिखीं। 1955 में वे आकाशवाणी इंदौर में पांडुलिपि लेखक के रूप में काम करने लगे। 1956-66 के दौरान उन्होंने म० प्र० सूचना विभाग में सरकारी नौकरी की।

1960 के दशक में उन्होंने साप्ताहिक ‘धर्मयुग’ में “बैठे ठाले,” स्तंभ लिखना शुरू किया और व्यंग्य लेखन के क्षेत्र में उनका नाम महत्त्वपूर्ण हो गया। 1980 में वे ‘हिन्दी एक्सप्रेस’ के संपादक बने लेकिन यह पत्रिका चल नहीं पाई। 1985 से वे नवभारत टाइम्स में ‘प्रतिदिन’ स्तंभ लिखते रहे।



इससे पहले 'रविवार' दिनसार और अनेक पत्र-पत्रिकाओं में उन्होंने व्यंग्य लिखे।

शरद जोशी यथार्थवादी थे। उन्होंने सत्य स्थितियों से कभी मुंह नहीं मोड़ा वे अपने परिवार, मित्र लेखन, मंचीन पाठ तथा समाज के प्रति बेहद ईमानदार थे। वे बहुत ज्यादा संवेदनशील थे। उनके अनुभवों का आकाश बड़ा बिषाल था। इसलिए उनका स्वभाव भी सरल था। वे सच्चे प्रगतिशील थे। अपने जीवन में जितने साहसी निर्णय शरद जोशी लिए, उतना साहसी कदम उठाने की क्षमता बहुत कम लोगों में होती है। जो गलत हैं, उसे गलत कहने की हिम्मत शरद जोशी हमेशा जुटाए रहे। शरद जोशी का जन्म भले ही भरी गर्मियों में हुआ लेकिन हिन्दी साहित्य में शरद जोशी शीतल और मन को मोहने वाली बयार बनकर सबको हर्षित करते रहे। वे आजीवन लेखन के प्रति प्रतिबद्ध रहे।

आमतौर पर शरद जोशी अपनी किताबों में आत्मकथ्य, भूमिका या दो शब्द लिखना पसन्द नहीं करते थे। "जादू की सरकार" में उन्होंने अपने लेखन के बारे में लिखा है, "लिखना मेरे लिए जिन्दगी जी लेने की एक तरकीब है। इतना लिख लेने के बाद अपने लिखे को देख मैं सिर्फ यही कह पाता हूँ कि चलो इतने वर्षों जी लिया। यह एक मुझे बढ़िया बहाना मिल गया। यह न होता तो इसका क्या विकल्प होता, अब सोचना कठिन है। लेखन मेरा एक निजी उद्देश्य है। कोई अब मुझे इससे बचा नहीं सकता मैं इससे बचकर जी भी नहीं सकता। चूंकि यह मेरे जीवन जीने का सहारा रहा है, इसलिए मेरी इससे कोई शिकायत नहीं है। मेरी सारी शिकायत स्वयं से अपने जीवन से और निरंतर लड़खड़ाते भाग्य से हो सकती है और प्रायः बेसबब हंस देने की आदत न होती तो शिकायत करता भी या उससे अधिक भी कुछ करता। पर धीरे-धीरे यह सब भी हंस कर टाल देने का मामला बन गया है, अब जीवन के आगे किसी प्रकार का विशेषण लगाना मुझे अजीब लगता है। चढ़-बढ़ कर यह कहा कि जीवन संघर्षमय रहा लेखक होने के कारण जिसे मैंने दुःखी-सुखी जिया, फिजूल है। जीवन होता ही संघर्षमय है। किसका नहीं होता ? लिखने वाले का होता है तो क्या अजब होता है।



शरद जोशी की रचनाएँ

हिन्दी व्यंग्य साहित्य को शिखर तक पहुँचाने वाले व्यंग्यार्थि शरद जोशी का समस्त साहित्य व्यंग्यमय है। उन्होंने कहानी उपन्यास, निबंध और नाटक लिखे, सभी रचनाओं में व्यंग्य का निर्वाह किया। उन्होंने अपने व्यंग्य लेखन के माध्यम से राजनीतिक, सामाजिक, साहित्यिक और प्रशासन की विकृतियों का पर्दाफाश किया है। एक तरफ से शरद जोशी का नाम तल्लु व्यंग्य का पर्याय बन गया। शरद जोशी की प्रकाशित कृतियाँ हैं-

1. परिक्रमा
2. किसी बहाने
3. जीप पर सवार इल्लियाँ
4. रहा किनारे बैठ
5. तिलस्म
6. दूसरी सतह
7. पिछले दिनों
8. मेरी श्रेष्ठ व्यंग्य रचनाएँ
9. यथासंभव
10. यथासमय
11. हम भ्रष्टन के भ्रष्ट हमारे
12. मुद्रिका रहस्य
13. दो व्यंग्य नाटक
14. जादू की सरकार
15. मैं, मैं और केवल मैं
16. प्रतिदिन
17. प्रतिदिन (समग्र तीन खण्ड)



18. यत्र तत्र सर्वत्र
19. झरता नीम, शाश्वत थीम
20. नाटक के तीर
21. भारत में जातिवाद एवं अन्य निबन्ध (अनुवाद)

शरद जोशी की अन्य रचनाएं “दूध पीने की कला”, “कोई एक आएगा”, “खतरा”, “ट्रिक”, जिसके हम मामा हैं, बिना शीर्षक, “संदेह से घिरी शराफत”, “बदतेदिल” और “सोफों की ट्रेजेडी”, शर्म- तुमको मगर आती है, “खोखला घर”, बौद्धिक असहमति, अतृप्त आत्माओं की रेल यात्रा, तिलिस्मा मुद्रिका रहस्य, बुद्ध के दांत’ हिटलर और आंचू तबाखू वाला, भगवान और मुर्गा, वर्जीनिया तुल्फ से सब डरते हैं, पुलिया पर बैठा आदमी, सारी बहस से गुजरकर, और ‘कैसा जादू डाला’, भी महत्त्वपूर्ण कहानियां हैं।

शरद जोशी ने लघु कथाएं भी लिखी हैं। शरद जोशी ने अपनी कहानियों में बहुत कम ही सही, पर ऐतिहासिक मिथकों का भी सहारा लिया है। शरद जोशी ऐतिहासिक पात्रों को आधार बनाकर भी कहानियाँ लिखते नजर आते हैं।

व्यंग्यकार सतत् जागरूक रहकर अपने परिवेश पर, जीवन और समाज की हर छोटी-सी-छोटी घटना पर तटस्थ भाव से दृष्टिपात करता है और उसके आभ्यंतरिक स्वरूप का निर्मम अनावरण करता है। इसीलिए व्यंग्यकार का धर्म अन्य विधाओं में लिखने वालों की अपेक्षा कठिन माना गया है, क्योंकि अपनी रचना प्रक्रिया में उसे बाह्य विषयों के प्रति ही नहीं, स्वयं अपने प्रति भी निर्मम होना पड़ता है। हिन्दी के सुपरिचित व्यंग्यकार शरद जोशी का यह संग्रह इस धर्म का पूरी मुस्तैदी से निर्वाह करता है। धर्म, राजनीति, सामाजिक जीवन, व्यक्तिगत आचरण - कुछ भी यहाँ लेखक की पैनी नज़र से बच नहीं पाया है और उनकी विसंगतियों का ऐसा मार्मिक उद्घाटन हुआ है कि पढ़ने वाला चकित होकर सोचने लगता है - अच्छा, इस मामूली सी दिखने वाली बात की असलियत यह है वास्तव में प्रस्तुत निबंध-संग्रह की एक-एक रचना शरद जोशी की व्यंग्य-दृष्टि का सबलतम प्रमाण है।



Unit - 4

Chapter - 1

शब्द रचना . उपसर्ग एवं प्रत्यय

उपसर्ग और प्रत्यय शब्दांश हैं जो नए शब्द बनाने के लिए मूल शब्दों के साथ जुड़ते हैं। उपसर्ग शब्द के पहले जुड़कर अर्थ बदलते हैं, जैसे प्रहार प्रहार जबकि प्रत्यय शब्द के अंत में जुड़कर अर्थ या व्याकरणिक रूप बदलते हैं, जैसे फल वाला फलवाला। ये भाषा में शब्दों का खजाना बढ़ाने में मदद करते हैं।

उपसर्ग वे शब्दांश जो किसी शब्द के आरंभ में जुड़कर उसके अर्थ में परिवर्तन या विशेषता लाते हैं।

उदाहरण

अ. नकारात्मक असत्य असत्य
प्र. अधिक आगे प्रबल प्रबल
वि. विशेष अलग विदेश विदेश
अनु. पीछे समान अनुवाद अनुवाद

प्रत्यय वे शब्दांश जो किसी शब्द के अंत में जुड़कर उसके अर्थ में परिवर्तन लाते हैं। प्रत्यय के दो मुख्य प्रकार हैं।

- कृत प्रत्यय (Krit Pratyay): जो क्रिया या धातु के अंत में लगते हैं (जैसे: पढ़ + 'आकू' = पढ़ाकू)।
- तद्धित प्रत्यय (Taddhit Pratyay): जो संज्ञा, सर्वनाम या विशेषण के अंत में लगते हैं (जैसे: मानव + 'ता' = मानवता)।
- उदाहरण:
 - -ई: बोल + ई = बोली
 - -ता: सुंदर + ता = सुंदरता
 - -इक: समाज + इक = सामाजिक

उपसर्ग और प्रत्यय में मुख्य अंतर

विशेषता उपसर्ग प्रत्यय
स्थान मूल शब्द के पहलेमूल शब्द के अंत में



renaissance

college of commerce & management

B.Com/BBA/BAJMC - I Year

Subject: Hindi

कार्य शब्द का अर्थ बदलता है अर्थ या व्याकरणिक रूप बदलता है।

उदाहरण सुपुत्र सुपुत्र मानवता मानवता

मुख्य तथ्य उपसर्ग और प्रत्यय स्वतंत्र रूप से उपयोग नहीं किए जाते वे केवल अन्य शब्दों के साथ मिलकर अर्थपूर्ण बनते हैं।

RENAISSANCE



Chapter – 2

पर्यायवाची शब्द कहते हैं।

मैंने यहां कुछ शब्द दिए हैं जो की आपके लिए महत्वपूर्ण हो सकते हैं -

पर्यायवाची शब्द

1. अश्व - घोड़ा, तुरंग, घोटक, हय
2. अहंकार - घमंड, अहं, गर्व, अभिमान
3. असुर - दानव, दनुज, राक्षस
4. अध्यापक - शिक्षक, आचार्य, गुरु
5. अतिथि - मेहमान, पाहून, अभ्यागत, आगंतुक
6. अमृत - सुधा, पीयूष, अमिय, अमी
7. तालाब - सरोवर, तड़ाग, सर, ताल
8. तट - कूल, किनारा, कगार
9. दशा - अवस्था, स्थिति, हालत, परिस्थिति
10. इन्द्र - सुरपति, देवराज, देवेंद्र, पुरंदर, शचीपति
11. दास - सेवक, भृत्य, नौकर, अनुचर
12. दूध - दुग्ध, क्षीर, पय, गोरस
13. उपवन - बाग, बगीचा, उद्यान, वाटिका, फुलवारी
14. ऋषि - मुनि, साधू, संत, महात्मा
15. कमल - पंकज, अरविन्द, पदम्, नीरज, जलज
16. पत्नी - भार्या, गृहणी, वधू, दारा
17. किरण - रश्मि, अंशु, कर, मरीचि
18. पर्वत - गिरी, पहाड़, अचल, नग, शैल



19. पेड़ - वृक्ष, विटप, पादप, महीतरु
20. चाँदनी - चंद्रिका, कौमुदी, ज्योत्स्ना
21. चतुर - कुशल, दक्ष, निपुण, प्रवीण, पटु
22. अरण्य - जंगल, वन, कानन, विपिन
23. आँख - नयन, नेत्र, लोचन, चक्षु, दृग
24. आकाश - आसमान, नभ, गगन, व्योम, अंबर
25. दुःख - पीड़ा, व्यथा, क्लेश, संताप
26. देव - देवता, सुर, अमर, विबुध
27. उद्देश्य - लक्ष्य, प्रयोजन, ध्येय, मकसद, इरादा
28. धनुष - धनु, चाप, कमान
29. उन्नती - विकास, उत्थान, तरक्की, प्रगति
30. परमात्मा - प्रभु, ईश्वर, भगवान्, ईश
31. कामदेव - मनोज, मदन, काम, अनंग
32. कार्य - काम, कृत्य, कर्म, काज
33. पथिक - राही, पंथी, मुसाफिर, बटोही
34. कोकिल - कोयल, पिक, परभृत
35. फूल - कुसुम, सुमन, प्रसून, पुष्प
36. चंद्र - चन्द्रमा, शशि, हिमांशु, राकेश, शशांक
37. भौरा - भ्रमर, अलि, भँवरा, षट्पद, भृंग
38. सूर्य - सूरज, दिनकर, आदित्य, रवि, भानु



Chapter – 3

विलोम शब्द का अर्थ है उल्टा या विपरीत अर्थ रखने वाले शब्द। ये शब्द हिंदी व्याकरण में किसी शब्द के विपरीत भाव को प्रकट करते हैं जैसे दिन रात सच झूठ ऊपर नीचे और अच्छा बुरा। इन्हें विपरीतार्थक शब्द भी कहा जाता है जो भाषा को अधिक स्पष्ट और प्रभावी बनाते हैं।

कुछ महत्वपूर्ण विलोम शब्द

यहाँ हिंदी भाषा के कुछ प्रमुख विलोम शब्द दिए गए हैं

शब्द	विलोम
अमृत	विष
अपना	पराया
आदर	अनादर
आशा	निराशा
आकाश	पाताल
आस्तिक	नास्तिक
कोमल	कठोर
गुण	अवगुण
जीवन	मृत्यु
ज्ञान	अज्ञान
धनी	निर्धन
धूप	छाया
नया	पुराना
नवीन	प्राचीन
मित्र	शत्रु
लाभ	हानि
सच	झूठ
सफल	असफल
सुगंध	दुर्गंध
सुख	दुःख

अनेक शब्दों के लिए एक शब्द

परिभाषा - वे शब्द जो अनेक शब्दों के स्थान पर अकेले ही प्रयोग किए जाते हैं, उन्हें अनेक शब्दों के लिए एक शब्द कहते हैं।



अनेक शब्दों के लिए एक शब्द उदाहरण -

1. जिस बात को कहा न जा सके - अकथनीय
2. जिसे टाला नहीं जा सकता - अनिवार्य
3. जो किसी के पीछे चलता हो - अनुयायी
4. जहां जाया न जा सके - अगम्य
5. अनेक राष्ट्रों से संबंधित - अंतर्राष्ट्रीय
6. जिसे जीता न जा सके - अजेय
7. जो क्षमा न किया जा सके - अक्षम्य
8. जो थोड़ा जानता हो - अल्पज्ञ
9. बिना वेतन के काम करने वाला - अवैतनिक
10. जिसे देखा न जा सके - अदृश्य, परोक्ष
11. जो कभी न मरे - अमर
12. अत्याचार करने वाला - अत्याचारी
13. जिसका विवाह हो गया हो - विवाहित
14. जो कभी बूढ़ा न हो - अजर
15. जिसे पाना सरल हो - सुलभ
16. जहां - जंगली पशु स्वतंत्रतापूर्वक रहते हैं - अभ्यारण
17. आकाश को चुमने वाला - गगनचुम्बी
18. जिसकी आयु छोटी हो - अल्पायु
19. जिसे पढ़ा न हो - अपठित
20. जिसकी कल्पना न की जा सके - अकाल्पनिक
21. अंदर की बात जानने वाला - अन्तर्यामी



22. जो किसी के अधीन न हो - स्वतंत्र
23. जो धर्म का कार्य करे - धर्मात्मा
24. इन्द्रियों को जीतने वाला - जितेन्द्रिय
25. जहां अनाथ रहते हों - अनाथालय
26. अच्छे भाग्य वाला - सौभाग्यशाली
27. प्रत्येक मास होने वाला - मासिक
28. मांस न खाने वाला - शाकाहारी
29. दूर की सोचने वाला - दूरदर्शी
30. सौ वर्षों का समूह - शताब्दी
31. जो आँखों के सामने हो - प्रत्यक्ष
32. सुनने वाला - श्रोता
33. जो पढ़ा-लिखा न हो - अनपढ़
34. जिसकी आत्मा धर्म में लीन हो - धर्मात्मा
35. जिसके मुंह से आग निकलती हो - ज्वालामुखी
36. श्रम द्वारा जीवन यापन करने वाला - श्रमजीवी
37. जो शिव का उपासक हो - शैव
38. जो अपने पर अवलम्बित हो - स्वावलम्बी
39. उपकार को मानने वाला - कृतज्ञ
40. दूसरे देश का - विदेशी
41. जिसमें विकार न हो - निर्विकार
42. जो कार्य करने में कठिन हो - दुष्कर
43. जो पढ़ा लिखा हो - साक्षर



renaissance

college of commerce & management

B.Com/BBA/BAJMC - I Year

Subject: Hindi

44. जो क्षण मात्र का हो - क्षणिक
45. जो गिना न जा सके - अगणित
46. जो अभी-अभी पैदा हुआ हो - नवजात
47. जिसके मन में ममता न हो - निर्मम
48. जो सच बोलता हो - सत्यवादी
49. जो अच्छे कुल में पैदा हो - कुलीन
50. पृथ्वी पर रहने वाला – थलचर

RENAISSANCE



Unit -5
Chapter - 1
विराम चिन्ह

विराम चिन्ह की परिभाषा

विराम चिन्ह वे संकेत होते हैं जिनका उपयोग लिखे गए वाक्यों में भाव, अर्थ और स्पष्टता को सही ढंग से प्रकट करने के लिए किया जाता है। ये चिन्ह वाक्य में ठहराव, विराम, प्रश्न, विस्मय आदि को दर्शाते हैं, जिससे पाठक को पढ़ते समय सही लय और समझ मिलती है।

उदाहरण: पूर्ण विराम (।), प्रश्नवाचक चिन्ह (?), अल्पविराम (,), उद्धरण चिन्ह (" ") आदि।

1. पूर्ण विराम चिन्ह

पूर्ण विराम (।) Full Stop

पूर्ण विराम (।) वाक्य के पूर्णतः समाप्त होने का प्रतीक है। इसका प्रयोग उन वाक्यों के अंत में किया जाता है जहाँ विचार या भाव पूर्ण हो जाता है और आगे कहने के लिए कुछ नहीं बचता है। किसी बात के पूरी तरह से समाप्त होने पर इसका उपयोग किया जाता है।

- **पूर्ण विराम के उदाहरण-**
 - "मैं दिल्ली में रहता हूँ।"
 - "दरवाजा बंद करो।"
 - "हम दिल्ली के वासी हैं।"

प्रश्नवाचक चिन्ह (?) Question mark

प्रश्नवाचक चिन्ह (?) भी एक विराम चिन्ह है, जिसका प्रयोग प्रश्नवाचक वाक्यों के अंत में किया जाता है। यह वाचक को यह समझने में मदद करता है कि वाक्य एक प्रश्न है और उत्तर की अपेक्षा है। कई बार इस चिन्ह के आभाव में वाक्य को समझना बहुत ही मुश्किल हो जाता है।

- **प्रश्नवाचक चिन्ह के उदाहरण-**
 - "तुम्हारा नाम क्या है?"
 - "क्या तुम दिल्ली जा रहे हो?"
 - "क्या आप जानते हैं कि यह कैसे करना है?"



विस्मयादिबोधक चिन्ह (!) Exclamation mark

विस्मयादिबोधक चिन्ह (!), जिसका उपयोग तीव्र भावनाओं को व्यक्त करने के लिए किया जाता है, जैसे कि आश्चर्य, विस्मय, खुशी, क्रोध, भय, आदि। इसे आप हैरान करने या चौंका देने वाले भाव को व्यक्त करने के लिए इस्तेमाल कर सकते हैं। यदि कोई बात आपको अचानक से हैरान कर दे, उस स्थान या वाक्य के साथ विस्मयादिबोधक चिन्ह का प्रयोग किया जा सकता है।

• विस्मयादिबोधक चिन्ह के उदाहरण-

- “वाह! यह तो बहुत सुंदर है!”
- “क्या बात है! तुमने यह कैसे किया?”
- “हाय! मुझे चोट लग गई!”

2. अल्प विराम चिन्ह | Viram Chinh ke naam

अल्प विराम चिन्ह (,) comma

यह चिन्ह (,) वाक्य के विभिन्न शब्दों, वाक्यांशों या अंशों को अलग करने के लिए प्रयोग होता है। यह वाक्य में थोड़ा ठहराव दर्शाता है और वाचक को वाक्य को सही ढंग से पढ़ने और समझने में मदद करता है। इससे 2 वाक्य को पूरा करने के लिए वाचक को एक ब्रेक मिलता है।

• अल्प विराम चिन्ह के उदाहरण-

- “मुझे फल, सब्जियां, और अनाज खरीदने हैं।”
- “मैं दिल्ली में रहता हूँ, जहाँ मैंने अपनी शिक्षा प्राप्त की।”
- “यह, मेरा मानना है, सबसे अच्छा तरीका है।”

अर्धविराम चिन्ह (;) semicolon symbol

अर्धविराम (;), जिसका प्रयोग वाक्यों को जोड़ने या वाक्य के महत्वपूर्ण भागों को अलग करने के लिए किया जाता है। यह अल्प विराम (,) से अधिक मजबूत ठहराव और पूर्ण विराम (।) से कम मजबूत ठहराव दर्शाता है।

• अर्धविराम चिन्ह के उदाहरण-

- “वह बहुत थका हुआ था; इसलिए वह जल्दी सो गया।”
- “वह दुकान पर गया, जहाँ उसने नई किताबें खरीदीं; फिर वह पार्क में गया, जहाँ वह किताबें पढ़ सकता था।”
- “वह सफल होना चाहता था; हालाँकि, रास्ते में कई चुनौतियाँ थीं।”



उपविराम (:) – Colon Symbol

उपविराम का चिन्ह को अपूर्ण विराम के नाम से भी जाना जाता है। इसे कोलन भी कहा जाता है। इसका प्रयोग मुख्य तौर पर किसी सूची को बनाने के लिए किया जाता है। इसका इस्तेमाल संवाद, नाटक या शीर्षक के आगे भी किया जाता है।

• उपविराम चिन्ह के उदाहरण-

- “शीर्षक- मां: ममता की मूरत”
- “संवाद-दिनेश: मैंने तुमसे घर के अंदर रहने कहा था।”
- “अमन: सुनो ये मेरी किताब नहीं है।”

निर्देशक चिह्न (—)

यह एक लंबा विराम चिह्न है जिसका उपयोग वाक्य में अचानक परिवर्तन या अतिरिक्त जानकारी जोड़ने के लिए किया जाता है।

• निर्देशक चिह्न के उदाहरण-

- “मैं बाजार जा रहा था—लेकिन अचानक बारिश होने लगी।”

योजक चिह्न (-) Hyphen Symbol

योजक चिह्न (-) एक उपयोगी विराम चिह्न है जो कई कामों के लिए इस्तेमाल होता है। इसका मुख्य उपयोग शब्दों, वाक्यांशों, या अंशों को जोड़ने के लिए किया जाता है। यह दो हिस्सों को मिलाकर एक शब्द बना सकता है या शब्दों के बीच एकता दिखा सकता है। योजक चिह्न का उपयोग समान अर्थ वाले शब्दों या वाक्यांशों को जोड़ने में भी होता है, और कभी-कभी यह विपरीत या विरोधी शब्दों को भी जोड़ने का काम करता है। इसके प्रयोग से लेखन अधिक स्पष्ट और संगठित बनता है।

• योजक चिह्नों के उदाहरण-

- “यह दुनिया अच्छे-बुरे का मिश्रण है।”
- “लोग आते-जाते रहते हैं।”
- “देना-लेना जीवन का हिस्सा है।”

3. अन्य विराम चिह्न

- **उद्धरण चिह्न (” “):** उद्धृत उपयोग किसी व्यक्ति के कहे हुए शब्दों को दोहराने या किसी के कथन को ज्यों का त्यों बताने के लिए किया जाता है।



- उदाहरण: उसने कहा, “मैं आऊंगा।”
- **कोष्ठक (())**: इसका उपयोग अतिरिक्त जानकारी देने के लिए किया जाता है।
 - उदाहरण: “वह (जो मेरे बचपन का मित्र है) अब डॉक्टर बन गया है।”
- **खण्डक ([])**: इसका उपयोग संपादकीय नोट या अतिरिक्त जानकारी देने के लिए किया जाता है।
 - उदाहरण: “वह [जो अपने समय का महान वैज्ञानिक था] आज भी याद किया जाता है।”
- **त्रुटि-चिह्न या विस्मरण चिह्न (^)**: इसका उपयोग पाठ में त्रुटि की दर्शाने या कुछ जोड़ने के लिए किया जाता है। यह हिन्दी लेखन में आम नहीं है।
- **पदलोप चिह्न (...)**: इसका उपयोग वाक्य के अधूरेपन या विचार के टूटने को दर्शाने के लिए किया जाता है।
 - उदाहरण: “मैं सोच रहा था कि... शायद मुझे वहाँ जाना चाहिए।”
- **तुल्यता सूचक चिह्न (=)**: इसका उपयोग गणितीय समानता या तुल्यता को दर्शाने के लिए किया जाता है।
 - उदाहरण: “ $2 + 2 = 4$ ”
- **विभाजक चिह्न (/)**: इसका उपयोग दो विकल्पों या विकल्पों को अलग करने के लिए किया जाता है।
 - उदाहरण: “हाँ/नहीं”
- **पुनरुक्ति सूचक चिह्न (,,)**: इसका उपयोग शब्दों या वाक्यों की पुनरावृत्ति को दर्शाने के लिए किया जाता है।
- **लाघव चिह्न (o)**: इसका उपयोग अंकों को संक्षिप्त रूप में प्रस्तुत करने के लिए किया जाता है।
 - उदाहरण: “2000 को 2००० लिखा जाता है।”
- **रेखांकन चिह्न ()**: इसका उपयोग इंटरनेट पते, ईमेल पते आदि में खाली स्थान को दर्शाने के लिए किया जाता है।

इन सभी विराम चिह्नों का उचित उपयोग आपके लेखन को अधिक स्पष्ट, प्रभावी बनाने के लिए किया जाता है।



विराम चिह्न के उदाहरण |

हिन्दी में विराम चिह्न का उपयोग वाक्यों और विचारों को स्पष्ट और सुसंगत रूप से प्रस्तुत करने के लिए किया जाता है। नीचे प्रत्येक विराम चिह्न का विस्तृत वर्णन दिया गया है:

क्रम	विराम चिह्न का नाम	चिह्न	प्रयोग का विवरण	उदाहरण
1	पूर्ण विराम	।	वाक्य समाप्त करने के लिए	वह स्कूल गया।
2	प्रश्नवाचक चिह्न	?	प्रश्न पूछने के लिए	तुम कहाँ जा रहे हो?
3	विस्मयादिबोधक चिह्न	!	आश्चर्य, क्रोध या भावना व्यक्त करने	वाह! कितना सुंदर दृश्य है!
4	अल्पविराम	,	वाक्य में छोटा विराम देने के लिए	राम, श्याम और मोहन आए।
5	अर्धविराम	;	दो स्वतंत्र वाक्यों को जोड़ने के लिए	वह पढ़ता है; वह अच्छा छात्र है।
6	कोष्ठक	()	अतिरिक्त जानकारी देने के लिए	गांधीजी (1869-1948) नेता थे।
7	उद्धरण चिह्न	" "	किसी के कथन या विशेष शब्द को	उसने कहा, "मैं आ रहा हूँ।"
8	एकल उद्धरण चिह्न	' '	किसी शब्द पर बल देने के लिए	उन्होंने इसे 'अद्वितीय' कहा।



क्रम	विराम चिह्न का नाम	चिह्न	प्रयोग का विवरण	उदाहरण
9	डैश	—	वाक्य में अलग बात या रुकावट दर्शाने	वह—जो कभी समय पर नहीं आता—आ
10	हाइफन	-	दो शब्दों को जोड़ने के लिए	हिंदी-अंग्रेज़ी शब्दकोश
11	कोलन (द्विबिंद)	:	सूची या उदाहरण से पहले	उसने यह खरीदा: किताबें. पेन. बैग।
12	अतिरिक्त विराम	...	अपूर्ण विचार या रुकावट दर्शाने के	शायद वह... कभी न आए।
13	स्लैश	/	विकल्प या विभाजन दिखाने के	हाँ/नहीं, वह/वे
14	प्रत्यय चिह्न	~	लगभग या औसत बताने के लिए	~100 लोग उपस्थित थे।
15	ऋण चिह्न	-	ऋणात्मक संख्या के लिए	तापमान -10°C है।
16	अंडरस्कोर	_	टेक्स्ट में खाली स्थान या नामों में	Sahil_Sethi
17	तारांकित चिह्न	*	विशेष टिप्पणी या शर्त के लिए	यह योजना *कुछ नियमों के अधीन है।
18	नुक़्ता	·	ध्वनि को विशेष रूप देने के लिए	ज़िंदगी, फ़ल



क्रम	विराम चिह्न का नाम	चिह्न	प्रयोग का विवरण	उदाहरण
19	संख्या चिह्न	#	नंबर या सोशल टैग के लिए	#शिक्षा_सर्वोपरि

विराम चिन्हों का सही उपयोग

विराम चिन्हों का सही उपयोग लेखन में बहुत महत्वपूर्ण होता है। यह पाठ को पढ़ने में सरल और समझने में आसान बनाता है। सही विराम चिन्हों के उपयोग से लेखन स्पष्ट, सुसंगत और प्रभावशाली बनता है।

लेखन में सटीकता

लेखन में मुख्य रूप से विराम चिन्हों का उपयोग सटीकता लाने के लिए किया जाता है। इसका मतलब है कि विचारों, तथ्यों, और भाषा को स्पष्ट और सही तरीके से प्रस्तुत किया जाए। जब हम विराम चिन्हों का सही तरीके से प्रयोग करते हैं, तो पाठक को भ्रमक जानकारी से बचाया जा सकता है। इससे लेखन की विश्वसनीयता और प्रभावशीलता भी बढ़ती है।



Chapter - 2 संक्षेपण

संक्षेपण का अर्थ किसी विस्तृत गद्यांश, प्रतिवेदन या अनुच्छेद के मुख्य भावों को कम से कम शब्दों में स्पष्ट रूप से प्रस्तुत करना है। इसे 'सार लेखन' या 'Precis Writing' भी कहते हैं, जिसमें मूल पाठ के अनावश्यक विवरणों को हटाकर केवल महत्वपूर्ण बातों को लगभग एक-तिहाई (1/3) शब्दों में लिखना होता है।

संक्षेपण की मुख्य विशेषताएं:

संक्षिप्तता: अनावश्यक विस्तार और अलंकारों को हटाना।

पूर्णता: मूल रचना का कोई महत्वपूर्ण विचार न छूटे।

स्पष्टता: भाषा सरल, सुबोध और सीधी होनी चाहिए।

क्रमबद्धता: विचारों का प्रवाह तार्किक और अनुक्रमिक होना चाहिए।

अन्य पुरुष (Third Person): संक्षेपण हमेशा अन्य पुरुष में लिखा जाता है।

संक्षेपण का उद्देश्य:

यह बड़े दस्तावेजों या रिपोर्टों को जल्दी समझने में मदद करता है। यह पत्रकारों, वकीलों और प्रबंधकों के लिए विशेष रूप से उपयोगी है।



Chapter -3

धर्म का अर्थ

धर्म शब्द संस्कृत भाषा के 'धृ' से बना है जिसका अर्थ है किसी वस्तु को धारण करना अथवा उस वस्तु के अस्तित्व को बनाये रखना।

धर्म का सामान्य अर्थ कर्तव्य है। इसीलिए व्यक्ति के जीवन से संबंधित अनेक आचरणों की एक संहिता है जो उसके कर्तव्यों और व्यवहारों को नियंत्रित और निर्देशित करती है। उसका मार्ग-दर्शन करती है जिससे कि वह अपने लक्ष्य को प्राप्त कर सके।

हिन्दू समाज में धर्म की मान्यता इस प्रकार है "धारणात धर्ममाहुः" अर्थात् धारण करने के कारण ही किसी वस्तु को धर्म कहा जाता है।

बोसांके ने धर्म की व्याख्या करते हुए कहा है कि " जहाँ धर्मपरायणता, अनुशक्ति एवं भक्ति मिलती है, वही धर्म का प्राथमिक रूप प्राप्त हो जाता है।

धर्म से मोटे तौर पर धर्म से आशय अलौकिक शक्ति पर विश्वास है। अलौकिक हम उसे कहते हैं जो लौकिक जगत से परे है। इंद्रियगम्य नहीं है। जो अगम और अगोचर है।

जिसे हम स्पर्श नहीं कर सकते, जिसे हम देख नहीं सकते, किन्तु उसका अस्तित्व है। वह सर्वशक्तिमान है और मानव जीवन व जगत को नियंत्रित करता है। यदि अलौकिक शक्ति साकार अर्थात् इंद्रिय गम्य है तो भी वह मानव की समझ और नियंत्रण से परे है।

धर्म की परिभाषा

विभिन्न विद्वानों द्वारा दी गई धर्म की परिभाषाएं निम्नलिखित हैं--

मजूमदार और मदन के अनुसार, "धर्म किसी भय की वस्तु अथवा शक्ति का मानवीय परिणाम है, जो पारलौकिक है इंद्रियों से परे है। यह व्यवहार की अभिव्यक्ति तथा अनुकूलन का रूप है, जो लोगों को अलौकिक शक्ति की धारणा से प्रभावित करता है।"

डॉ. राधाकृष्णन, " धर्म की अवधारणा के अन्तर्गत हिन्दू उन स्वरूपों और प्रतिक्रियाओं को लाते हैं जो मानव-जीवन का निर्माण करती हैं और उसको धारण करती हैं।"

गिलिन और गिलिन, " धर्म के समाजशास्त्रीय क्षेत्र के अन्तर्गत एक समूह में अलौकिक से सम्बंधित उद्देश्यपूर्ण विश्वास तथा इन विश्वासों से सम्बंधित बाहरी व्यवहार, भौतिक वस्तुएँ और प्रतीक आते हैं।"

फ्रेजर, " धर्म से मेरा तात्पर्य मनुष्य से श्रेष्ठ उन शक्तियों की संतुष्टि अथवा आराधना करना है



जिनके बारे में व्यक्तियों का विश्वास हो कि वे प्रकृति और मानव-जीवन को नियंत्रित करती हैं तथा उनको निर्देश देती हैं।"

टेलर, " धर्म का अर्थ किसी आध्यात्मिक शक्ति में विश्वास करना है।"

दुर्खोम, " धर्म पवित्र वस्तुओं से सम्बंधित विश्वासों और आचरणों की समग्रता है जो इन पर विश्वास करने वाले को एक नैतिक समुदाय के रूप में संयुक्त करती है।"

होबेल, " धर्म अलौकिक शक्ति के ऊपर विश्वास में आधारित है, जो आत्मवाद और मानव को सम्मिलित करता है।"

मैलिनोवस्की, " धर्म क्रिया का एक ढंग है और साथ ही विश्वासों की एक व्यवस्था भी, और धर्म एक समाजशास्त्रीय घटना के साथ-साथ एक व्यक्तिगत अनुभव भी है।"

होनिगशीम, " प्रत्येक मनोवृत्ति जो इस विश्वास पर आधारित या इस विश्वास से सम्बंधित है कि अलौकिक शक्तियों का अस्तित्व है और उनसे सम्बन्ध स्थापित करना सम्भव व महत्वपूर्ण है, धर्म कहलाती है।"

ऑगबर्न और निमकाक, " धर्म मानवोपरि शक्तियों के प्रति अभिवृत्तियाँ हैं।"

जॉनसन, " एक धर्म प्राणियों, शक्तियों, स्थान अथवा अन्य वस्तुओं की अलौकिक व्यवस्था से सम्बंधित विश्वासों एवं व्यवहारों की अधिक या कम साम्यपूर्ण व्यवस्था है।"

पाँल टिलिक " धर्म वह है, जो अन्ततः हमसे सम्बंधित है।"

उपर्युक्त परिभाषाओं के आधार पर संक्षेप में कहा जा सकता है कि धर्म किसी-न - किसी प्रकार की अतिमानवीय (Super-human) या अलौकिक (Super-natural) या समाजोपरि (Supra-social) शक्ति पर विश्वास है जिसका आधार भय, श्रद्धा भक्ति और पवित्रता की धारणा है और जिसकी अभिव्यक्ति प्रार्थना, पूजा या आराधना आदि के रूप में की जाती है।

धर्म की विशेषताएं या लक्षण

धर्म की विशेषताएं अथवा लक्षण निम्नलिखित हैं--

1. शक्ति में विश्वास

धर्म की पहली विशेषता यह है कि यह शक्ति में विश्वास पर आधारित है। धर्म शक्ति पर आधारित है वह मनुष्य निर्मित न होकर प्राकृतिक होता है।

2. दिव्य चरित्र

धर्म से जिस शक्ति में विश्वास किया जाता है, उसकी प्रकृति अलौकिक होती है। चूंकि यह चरित्र दिव्य होता है, अतः मानव समाज से परे होती है।



3. पवित्रता का पत्र

सामाजिक जीवन के तत्वों को दो भागों में विभाजित किया जा सकता है- पवित्र और अपवित्र। धर्म में सिर्फ उन्हीं तत्वों को महत्व प्रदान किया जाता है, जो पवित्रता की अवधारणा से सम्बंधित होते हैं।

4. सैद्धांतिक व्यवस्था

सैद्धांतिक व्यवस्था भी धर्म का अनिवार्य तत्व है इसका कारण यह है कि प्रत्येक धर्म की एक सैद्धांतिक व्यवस्था होती है। इस सैद्धान्तिक व्यवस्था की सहायता से धर्म को व्यावहारिक स्वरूप प्रदान किया जाता है।

5. निश्चित प्रतिमान

प्रत्येक धर्म के कुछ निश्चित प्रतिमान होते हैं। ये प्रतिमान ईश्वरीय रक्षा का प्रतिनिधित्व करते हैं। यही कारण है कि व्यक्ति इन प्रतिमानों का आदर करता है तथा इन प्रतिमानों के आधार पर अपने व्यवहार का निर्धारण करता है।

6. मूल्यात्मक व्यवस्था

धर्म समाज में मूल्यों की एक व्यवस्था का निर्धारण करता है। यही कारण है कि धर्म को मूल्य और भावनाओं के आधार पर समझने का प्रयास किया जाता है। तर्क और विवेक को धर्म में कोई स्थान नहीं है।

7. धार्मिक चेतना

प्रत्येक धर्म अपने में धार्मिक चेतना को विकसित करता है। धार्मिक चेतना के कारण ही व्यक्ति धर्म का आदर करता है। आज संसार में जो अनेक धर्म पाए जाते हैं, उनका जन्म और विकास धार्मिक चेतना के कारण ही हुआ है।

8. कर्मकांड

धर्म से संबंध की अभिव्यक्ति पूजा पाठ, प्रार्थना या कर्मकांड के रूप में होती है। प्रत्येक धर्म की मान्यताएं, विश्वास एवं पौराणिक गाथाओं के अनुसार कर्मकांड होता है। यह वजह है कि विभिन्न धर्मों के कर्मकांडों में भिन्नता दिखाई पड़ती है।

9. धार्मिक मान्यताएं

प्रत्येक समाज के धर्म की अपनी अलग-अलग मूल्य एवं मान्यताएं हैं, यही मान्यताएं धर्म को एक विशिष्ट स्वरूप प्रदान करती हैं। यह कारण है कि लोग समस्याओं एवं कठिनाइयों में भी धर्म पर विश्वास करके साहस व धैर्य से कार्य करते हैं।

. निषेध

प्रत्येक धर्म में लोगों के व्यवहारों के नकारात्मक पक्ष को प्रभावित करने की दृष्टि से कुछ निषेध पाए जाते हैं। निषेध का तात्पर्य यही है कि उन्हें कुछ कार्यों की मनाही की जाती है, उन्हें बताया जाता है कि क्या-क्या नहीं करना चाहिए, जैसे झूठ नहीं बोलना चाहिए, दुराचार, व्याभिचार, बेईमानी आदि



नहीं करनी चाहिए। कुछ निषेध सभी धर्मों में समान रूप से पाए जाते हैं। जबकि कुछ विशेष समाजों से ही संबंधित होते हैं। विवाह संबंधी निषेध प्रत्येक समाज में अलग-अलग पाए जाते हैं।

11. धार्मिक संस्तरण

सामान्यतः प्रत्येक धर्म से संबंधित संस्तरण की एक व्यवस्था पाई जाती है। जिन लोगों को धार्मिक क्रियाएँ अथवा कर्मकांड कराने का समाज द्वारा विशेष अधिकार प्राप्त होता है, उन्हें अन्य लोगों की तुलना में संस्कारात्मक दृष्टि से उच्च एवं पवित्र समझा जाता है। ऐसे लोगों में पंडे, पुजारी, महंत, संत, पादरी, मौलवी ओझा आदि आते हैं। संस्तरण की प्रणाली में दूसरा स्थान उन लोगों को प्राप्त होता है जो धर्म के अंतर्गत बताए गए मार्ग पर चलते हैं। जो लोग धार्मिक आदेशों का पालन नहीं करते, धर्म विरुद्ध कार्य करते हैं। अथवा अपवित्रता लाने वाली वस्तुओं के संपर्क में आते हैं, उन्हें समाज में निम्नतम स्थान होता है।

धर्म और समाज

धर्म को मानव के सामाजिक तथा व्यक्तिगत जीवन के उस पक्ष के रूप में भी देखा जाता है, जिसमें मानव की उदात्त आकांक्षाएँ होती हैं। यह समाज की नियामक संरचना का आधार स्तम्भ है। यह समाज की सभी नैतिक मान्यताओं, मूल्यों और आचार की मर्यादा रखता है। इस प्रकार यह समाज में सार्वजनिक व्यवस्था का आधार है और सभी नर-नारियों के लिए अन्तःचेतना का उद्गम है। यह मानव में श्रेष्ठ गुणों का संचार कर उसे सभ्य बनाता है। लेकिन साथ ही मानव को आगे बढ़ने में यह उसके सामने बाधाएँ भी उपस्थित करता है। मनुष्य जाति पर इसका सबसे बुरा प्रभाव यह देखने में आया है कि यह मनुष्य को कट्टरपंथी, असहिष्णु, अज्ञानी, अंधविश्वासी और रूढ़िवादी बना देता है। (ओ. डेअ. टी. एफ. 1966)

समाज के सदस्यों को एक सूत्रबद्ध करने के लिए धर्म सबसे दृढ़ सूत्र है। परंतु इसके कारण ही धार्मिक युद्ध तथा सांप्रदायिक तनाव भी पैदा हुए हैं। फिर भी हमें यह ध्यान में रखना चाहिए कि समाज में सांप्रदायिक तनाव के कारणों में अधार्मिक मामले और ऐसे स्वार्थों के टकराव भी होते हैं जिनका धर्म से कोई संबंध नहीं होता। उदाहरण के लिए भारतीय समाज में होने वाले सांप्रदायिक तनावों को देखा जा सकता है।

अधिकांश लोग धर्म को विश्वव्यापी मानते हुए इसे समाज की एक महत्वपूर्ण संस्था मानते हैं। परंतु मार्क्सवादी विचारकों की दृष्टि में धर्म समाज का आवश्यक अंग नहीं है।

कार्ल मार्क्स के शब्दों में, " धर्म दलित वर्ग की आह है, निर्दयी विश्व की भावना है और निष्प्राण स्थितियों की आत्मा है। यह जनता के लिए अफीम का काम करता है।"

उनका विश्वास था कि धर्म का विश्वास शोषित लोगों के दिमाग में गरीबी और शोषण का उत्पीड़न सहने के लिए अफीम के रूप में काम करता है।



अतः मानव समाज को तब तक इसकी आवश्यकता रहती है जब तक कि वह समाज के उच्च वर्ग द्वारा दलित और शोषित होता रहता है। समाजवादी समाज में इसकी कोई आवश्यकता नहीं होगी और यही सामाजिक विकास का अंतिम चरण होगा।

धर्म और आस्था

सभी धर्मों के मूल में आस्था की संकल्पना होती है। इस दृष्टि से धर्म, आस्था का बाह्य रूप है जो मानव समाज को उनके मूल लौकिक और लोकोत्तर जीवन से बाँधे रखता है। आस्था के कारण ही मानव अन्य जीवधारियों से भिन्न है। निश्चित रूप से यह व्यक्ति निष्ठ और निजी मामला है। हम एक दूसरे के विश्वासों का आदर करते हैं। इससे हमें व्यापक मानवीय आधार प्राप्त होता है।

इस प्रकार हम सबको एक सूत्र में बाँधे रखने के कारण आस्था, तर्क से अधिक महत्वपूर्ण है।

प्राचीन भारतीय चिंतनधारा के अनुसार, " आस्था ही आदमी को बनाती है जैसी आस्था वैसा व्यक्ति" (भगवद् गीता)।

बुद्ध धर्म के ग्रंथों में आस्था को मानव की पाँच कार्य शक्तियों में से एक माना गया है। (अन्य कार्य शक्तियाँ हैं ऊर्जा, मननशीलता, एकाग्रता और पूर्ण ज्ञान)।

आर. पाणिकर के अनुसार, " आस्था मूलधार है और सभी मानव संबंध उसमें निहित हैं। यह एक प्रकार की प्रेमावस्था भी है। अपनी आस्था के माध्यम से आस्थावान अपने विचारों का आदान-प्रदान करता है और नास्तिक के साथ अपना तादात्म्य स्थापित करता है। इस प्रकार मानव अपने दैनिक जीवन में एक सूत्रबद्ध हो जाता है

अद्वैतवाद

अद्वैतवाद एक दार्शनिक स्थिति है दुनिया की एकता को पहचानता है, अर्थात् इसमें शामिल सभी वस्तुओं की समानता, उनके बीच संबंध और पूरे आत्म-विकास जो वे बनाते हैं। अद्वैतवाद एक ही शुरुआत के प्रकाश में विश्व की घटनाओं की विविधता पर विचार करने के लिए एक विकल्प है, जो सब कुछ मौजूद है। अद्वैतवाद के विपरीत द्वैतवाद है, जो सिद्धांतों की बहुलता के आधार पर एक दूसरे से स्वतंत्र दो सिद्धांतों और बहुलवाद को मान्यता देता है।

अद्वैतवाद का अर्थ और प्रकार

एक विशिष्ट वैज्ञानिक और वैचारिक है अद्वैतवाद। पहले का मुख्य लक्ष्य एक विशेष वर्ग की घटनाओं में समानता को खोजना है: गणितीय, रासायनिक, सामाजिक, भौतिक, और इसी तरह। दूसरे का कार्य सभी मौजूदा



घटनाओं के लिए एक आधार ढूँढना है। इस तरह के दार्शनिक प्रश्न के समाधान की प्रकृति के रूप में सोच और अस्तित्व के अनुपात के रूप में, अद्वैतवाद को तीन किस्मों में विभाजित किया गया है:

1. विषयगत आदर्शवाद।
2. भौतिकवाद।
3. उद्देश्य आदर्शवाद।

व्यक्तिपरक आदर्शवादी दुनिया को सामग्री के रूप में व्याख्या करता है व्यक्तिगत कारण और इसमें वह अपनी एकता को देखता है। भौतिकवादी अद्वैतवाद वस्तुगत दुनिया को पहचानता है, सभी घटनाओं को पदार्थ या उसके गुणों के अस्तित्व के रूप में मानता है। एक वस्तुनिष्ठ आदर्शवादी अपनी स्वयं की चेतना और उसके बाहर मौजूद विश्व को पहचानता है।

अद्वैतवाद की अवधारणा

अद्वैतवाद एक अवधारणा है जो आधार को मान्यता देती है एक पदार्थ की दुनिया। यही है, दर्शन की यह दिशा द्वैतवाद और बहुलवाद के विपरीत, एक ही शुरुआत से आती है, जो दिशाएँ आध्यात्मिक और भौतिक के बीच के संबंध को प्रमाणित करने में असमर्थ हैं। अद्वैतवाद दुनिया की एकता को इस समस्या के समाधान के रूप में देखता है, जो कि सामान्य आधार है। इस आधार के रूप में जो मान्यता प्राप्त है, उसके आधार पर अद्वैतवाद भौतिकवादी और आदर्शवादी में विभाजित है।

अद्वैतवाद के रूप

अद्वैतवाद मूल प्रश्न को हल करने का एक तरीका है दर्शन, जो संसार के मांगे गए मूलभूत सिद्धांत की समझ को ध्यान में रखते हुए निरंतर और असतत रूप में विभाजित है। निरंतर अद्वैतवाद रूप और सब्सट्रेट, असतत - संरचना और तत्वों के संदर्भ में दुनिया का वर्णन करता है। पहले हेगेल, हेराक्लिटस, अरस्तू जैसे दार्शनिकों द्वारा प्रतिनिधित्व किया गया था। डेमोक्रीटस, लाइबनिज और अन्य को दूसरे का प्रतिनिधि माना जाता है।

एक मुनि के लिए, मौलिक खोजना नहीं है मुख्य लक्ष्य। वांछित प्राथमिक सब्सट्रेट तक पहुंचने के बाद, उन्हें विपरीत दिशा में, भागों से पूरे में स्थानांतरित करने का अवसर मिलता है। समानता की परिभाषा आपको प्राथमिक तत्वों के बीच शुरू में एक कनेक्शन खोजने की अनुमति देती है, और फिर उनके अधिक जटिल कनेक्शनों के बीच। अपने प्राथमिक तत्वों से पूरे की ओर गति को दो तरीकों से अंजाम दिया जा सकता है: diachronic और synchronous

इसके अलावा, अद्वैतवाद न केवल एक दृष्टिकोण है, बल्कि और अनुसंधान विधि। उदाहरण के लिए, गणितीय संख्याओं का सिद्धांत अपनी कई वस्तुओं को प्राकृतिक संख्याओं से प्राप्त करता है। ज्यामिति में, बिंदु को आधार के रूप में लिया जाता है। उन्होंने एक विश्वदृष्टिवाद विकसित करते हुए एक विज्ञान की सीमा के भीतर एक अद्वैत दृष्टिकोण लागू करने का प्रयास किया। इस प्रकार, सिद्धांतों ने प्रकट किया कि यांत्रिक आंदोलन (मैकेनिकवाद), संख्या (पाइथागोरस), भौतिक प्रक्रियाएं (भौतिकवाद), और इसी तरह विश्व आधार माना जाता है। यदि इस प्रक्रिया में कठिनाइयाँ उत्पन्न हुईं, तो इससे बहुवाद द्वारा अद्वैतवाद को नकार दिया गया।



राजनीतिक अद्वैतवाद

राजनीतिक क्षेत्र में अद्वैतवाद व्यक्त किया जाता है विपक्ष, नागरिक स्वतंत्रता और शक्तियों के पृथक्करण की प्रणाली के विनाश में एकदलीय प्रणाली की स्थापना। इसमें नेतृत्व और पार्टी और राज्य तंत्र का पूर्ण संयोजन शामिल हो सकता है। हिंसा, आतंक और सामूहिक दमन की खेती।

उदारीकरण

आर्थिक गतिविधियों के नियमन के लिए बनाए गए नियम- क़ानून ही जब संवृद्धि और विकास के मार्ग की सबसे बड़ी बाधा बन जाते हैं। इन्हीं प्रतिबंधों को दूर कर अर्थव्यवस्था के विभिन्न क्षेत्रों को 'मुक्त' करने के लिए जिस नीति को अपनाया जाता है उसे **उदारीकरण** **liberalization** कहा जाता है। **आर्थिक उदारीकरण से आशय** (arthik udarikaran se ashay) व्यापार को अनावश्यक प्रतिबंधों से मुक्त करना है। नियम क़ानूनों को सरल बनाना ताकि स्वतंत्र **बाज़ार** व्यवस्था का निर्माण किया जा सके। चलिये **भारत और उदारीकरण** को हम और भी स्पष्ट भाषा में समझने का प्रयास करते हैं।

किसी भी देश का विकास तभी संभव होता है जब उस देश में होने वाला व्यापार फलता-फूलता है। चाहे फ़िर वह व्यापार देश के भीतर हो या देश के बाहर। किंतु सरकार को किसी भी उद्योग या व्यापार पर कुछ नियम क़ानून या आवश्यक प्रतिबंध भी लगाने होते हैं।

जैसे कि- (1) किसी भी उद्यमी को फ़र्म लगाने या बंद करने हेतु लाइसेंस या किसी विशिष्ट सरकारी अधिकारी की अनुमति प्राप्त करना, (2) अनेक उद्योगों में निजी उद्यमियों के प्रवेश पर प्रतिबंध होना, (3) कुछ औद्योगिक उत्पादों की क़ीमतों के निर्धारण तथा उनके वितरण पर सरकार का नियंत्रण होना।

आर्थिक गतिविधियों के नियमन के लिए बनाए गए नियम- क़ानून ही जब संवृद्धि और विकास के मार्ग की सबसे बड़ी बाधा बन जाते हैं। इन्हीं प्रतिबंधों को दूर कर अर्थव्यवस्था के विभिन्न क्षेत्रों को 'मुक्त' करने के लिए जिस नीति को अपनाया जाता है उसे **उदारीकरण** (**liberalization**) कहा जाता है।

किसी भी देश का विकास तभी संभव होता है जब उस देश में होने वाला व्यापार फलता-फूलता है। चाहे फ़िर वह व्यापार देश के भीतर हो या देश के बाहर। किंतु सरकार को किसी भी उद्योग या व्यापार पर कुछ नियम क़ानून या आवश्यक प्रतिबंध भी लगाने होते हैं।



उदारीकरण की आवश्यकता

उद्योग-व्यापार, आयात-निर्यात, औद्योगिक क्षेत्र, वित्तीय क्षेत्र, कर सुधार, विदेशी विनिमय बाज़ार आदि क्षेत्रों में बनाए गए नियमों और क़ानूनों के चलते देश की आर्थिक गतिविधियों में अनेक बढ़ाएँ उत्पन्न हो रही थीं। आर्थिक विकास के रास्ते में आने वाली बाधाओं को हटाने के लिए 1991 में आरम्भ की गई सुधारवादी नीतियों के तहत सरकार को **आर्थिक उदारीकरण की नीति** अपनानी पड़ी।

जैसे कि- (1) किसी भी उद्यमी को फ़र्म लगाने या बंद करने हेतु लाइसेंस या किसी विशिष्ट सरकारी अधिकारी की अनुमति प्राप्त करना, (2) अनेक उद्योगों में निजी उद्यमियों के प्रवेश पर प्रतिबंध होना, (3) कुछ औद्योगिक उत्पादों की क़ीमतों के निर्धारण तथा उनके वितरण पर सरकार का नियंत्रण होना।

आर्थिक गतिविधियों के नियमन के लिए बनाए गए नियम- क़ानून ही जब संवृद्धि और विकास के मार्ग की सबसे बड़ी बाधा बन जाते हैं। इन्हीं प्रतिबंधों को दूर कर **अर्थव्यवस्था** के विभिन्न क्षेत्रों को 'मुक्त' करने के लिए जिस नीति को अपनाया जाता है उसे **उदारीकरण (liberalization)** कहा जाता है।

1) **रोज़गार का सृजन** - उदारीकरण केवल बहुराष्ट्रीय कंपनी तक सीमित नहीं होता बल्कि इससे स्वदेशी उद्योग तथा फ़र्म भी संचालन तथा स्पर्धा में सामने आती हैं। इसलिए बहुराष्ट्रीय कंपनियों पर अंकुश के साथ-साथ स्वदेशी उद्योगों और फ़र्मों पर भी **उदारीकरण** आवश्यक है। इससे रोज़गार में सृजनात्मक वृद्धि होती है। जो कि हमारी देश की मूल आवश्यकता है।

2) **बजट घाटे में निरंतर वृद्धि** - उस समय देश के बजट घाटे में निरंतर वृद्धि देखी जा रही थी। इसलिए निरंतर बढ़ते बजट घाटे को कम करने के लिए **उदारीकरण की नीति** अपनाई गई।

3) **मुद्रा स्फीति में लगातार वृद्धि** - घाटे की वित्त व्यवस्था अपनाने के कारण मुद्रा स्फीति अपने विकराल रूप को धारण कर चुकी थी। जिसका परिणाम यह हुआ कि सम्पूर्ण देश मँहगाई की मार से हलाकान हो रहा था। जिस पर नियंत्रण पाने के लिए **उदारीकरण की आवश्यकता** पड़ी।

4) **प्रतिकूल भुगतान संतुलन** - घरेलू क़ीमत स्तर में वृद्धि के फलस्वरूप आयातों को भरपूर प्रोत्साहन मिला। जबकि निर्यात बेहद हतोत्साहित हुए। जिस कारण देश का भुगतान तेज़ी से प्रतिकूल होने लगा। जिस पर नियंत्रण पाने के लिए उदारीकरण की आवश्यकता पड़ी।



5) **विनियोग ढाँचे पर प्रतिकूल प्रभाव** - मुद्रा स्फीति बढ़ने के कारण लोगों के पास अनावश्यक रूप से मुद्रा की मात्रा बढ़ने लगी। जिस कारण विलासितापूर्ण वस्तुओं की माँग बढ़ने लगी जिसके फलस्वरूप विलासितापूर्ण वस्तुओं का उत्पादन बढ़ने लगा और आवश्यक वस्तुओं का उत्पादन घटने लगा।

6) **विदेशी ऋणों का बढ़ता बोझ** - चूँकि सार्वजनिक क्षेत्र को विकसित करने की प्राथमिकता, अंतर्राष्ट्रीय वित्तीय संस्थाओं एवं विदेशी सरकार से बड़ी मात्रा में ऋण एवं आर्थिक सहायता में वृद्धि का कारण बनने लगी थीं। जिस कारण देश पर विदेशी ऋण एवं इनके ब्याज का बोझ लगातार बढ़ने लगा। इन सब समस्याओं पर नियंत्रण पाने का एक मात्र था **उदारीकरण नीति** को अपनाना।

7) **रहन सहन के स्तर में कमी** - देश में बढ़ती मँहगाई के कारण उपभोक्ताओं की औसत क्रयशक्ति में कमी आ गयी। तथा उपभोग व्यय में वृद्धि होने लगी। जिसका परिणाम यह हुआ कि उपभोक्ता के औसत जीवन स्तर में लगातार गिरावट आने लगी थी। ऐसी स्थिति में औसत जीवन स्तर को ऊँचा उठाने के लिए **उदारीकरण की आवश्यकता** पड़ी।

उदारीकरण की विशेषता

- 1) कुछ विशिष्ट क्षेत्रों को छोड़कर शेष सभी क्षेत्रों के लिए लाइसेंस और परमिट पर लगे विभिन्न नियंत्रणों को समाप्त करना।
- (2) आर्थिक विकास प्रक्रिया में आयी रुकावट को दूर करना। इसके लिए, कर की दरों को कम करना और अनावश्यक नियंत्रणों को हटाना
- (3) उत्पादन को बढ़ावा देने के उद्देश्य से उत्पादन संबंधी क्षेत्रों पर लगाए गए प्रतिबंधों को हटाना।
- (4) व्यापार को व्यापक स्तर तक पहुँचाने के लिए विदेशी विनियोग को बढ़ावा देना।
- (5) **उदारीकरण** का सीधा लाभ कृषि क्षेत्र को पहुँचाना। यानि कि कृषि का तीव्र विकास करना।
- 6) **बजट घाटे** एवं कुव्यवस्था के जाल से निकलने हेतु निजी क्षेत्र की व्यापक भूमिका बढ़ाना।
- (7) **बजट घाटे** को कम कर मुद्रास्फीति को नियंत्रित करना।
- (8) **भुगतान संतुलन** को अनुकूल बनाने का भरसक प्रयास करना।



renaissance

college of commerce & management

B.Com/BBA/BAJMC - I Year

Subject: Hindi

- (9) अंतर्राष्ट्रीय बाज़ारों में प्रवेश हेतु भारतीय उद्योगों में प्रतिस्पर्धा बढ़ाना।
- (10) सार्वजनिक क्षेत्र में गतिशीलता तथा कुशलता लाने के लिए सार्वजनिक क्षेत्र की कंपनियों के मुक़ाबले आरक्षित क्षेत्रों को कम करना।
- (11) नित नए उद्योगों की स्थापना को आसान बनाना। ताकि ये उद्योग बड़े स्तर पर प्रतिस्पर्धा में अपनी भागीदारी निभा सकें।
- (12) वाणिज्यिक बैंकों को उनके द्वारा दिये गये ऋणों पर ब्याज़ तय करने की छूट देना।

RENAISSANCE